



प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण  
( चौथा खण्ड )

सम्पादक  
आचार्य नलिनविलोचन शर्मा  
शोध-सहायक  
श्रीरामनारायण शास्त्री  
श्रीदामोदर मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्  
पटना

प्रकाशक

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

सम्मेलन-भवन, पटना-३

प्रथम संस्करण; वि.म.व. २०१६; शकाब्द १८८१

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य एक रुपया मात्र

मुद्रक

नागरी-प्रकाशन (प्राइवेट) लि०

द्वारा युगान्तर प्रेस, पटना-४



स्थानों में वे अनेक पुरानी पांथियों का पता लगा आये थे, उन स्थानों में अब एक भी पांथी नहीं बची है - सब को-सब किसी-न-किसी तरह नष्ट हो गईं।

दक्षिण और उत्तर-विहार के अनेक स्थानों में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के बृहत् भाण्डार का पता लगा है। उत्तर-विहार की बृहत्-सी पांथियाँ अग्नि-कारण और बाढ़ से नष्ट हो चुकी हैं। दक्षिण-विहार में भी दीमकों और चूहों से विशाल ग्रन्थगणिका का संहार होता जा रहा है। खोज से पता चला है कि बिहार-राज्यान्तर्गत श्रोथानागपुर-प्रदेश में भी प्रचुर साहित्यिक निधि काल का कलेवा हो रही है। खेद है कि सरस्वती-भाण्डार का अर्धनिश ज्ञय हो रहा है, पर हमाग समाज आज भी उसकी रक्षा में तत्पर अथवा सजग नहीं है। सबसे बड़कर दुःख यह है कि ग्रन्थान्वेषकों को, नाना प्रकार की अनुविधाओं और कठिनाइयों का सामना करने तथा उचित मूल्य देने पर भी, कुछ ही पांथियाँ मिलती हैं—अधिकांश लोग पांथियाँ देने या बेचने को राजी हो नहीं होते और कितने ही लोग तो पांथियाँ दिखाते भी नहीं, प्रतिलिपि कराने की सुविधा भला क्यों कर देंगे ! इस प्रकार देश की अमर ज्ञान-कल्पिता का दिन-दिन नाश होता जा रहा है।

विहार-राज्यभाषा परिषद् के संग्रहालय में संक्षिप्त पांथियों का विवरणानक परिचय क्रमशः त्रैमासिक 'साहित्य' में प्रकाशित होता रहा है और आगे भी होता रहेगा तथा उन विवरणों के दो संग्रह भी पुस्तक-रूप में निकले हैं, जिनसे हिन्दी के कई पुराने कवियों का पता लग चुका है तथा कई अज्ञात एवं अलभ्य ग्रन्थ भी उपलब्ध हो चुके हैं, जिनसे शोध-कार्य में अनूत्सव सहायता मिलने की सम्भावना है। आज यह अनुमान करना भी कठिन है कि सभी पांथियों के संग्रहीत हो जाने पर गवेषणा की समस्या कितनी सरल हो जायगी। पांथियों का अन्वय बनानेवालों को भगवान् सुदुर्द्धि दें।

इस विवरण-पुस्तिका में चार सौ उन्नीस हिन्दी-ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-अनुसन्धान-विभाग के वर्तमान अध्यक्ष आचार्य नलिन-विलोचन शर्मा के निदेशन में विभागीय अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री और श्रीदामोदर मिश्र ने विवरण तैयार करने में बड़े मनोयोग से परिश्रम किया है। एक्यासी ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय यथास्थान पादशिष्टियों में अंकित है। विभागाध्यक्ष ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में सत्रह विहारी ग्रन्थकारों का प्रामाणिक परिचय समाविष्ट कर दिया है। इस प्रकार पुरानी पांथियों के विवरण का यह चौथा खण्ड भी पिछले तीन खण्डों की तरह साहित्यिक शोध के कार्य में महत्त्वपूर्ण सहायता पहुँचानेवाला बन गया है। केवल हिन्दी के ही प्राचीन ग्रन्थों का विवरण रहने से इस चौथे खण्ड की उपयोगिता विशेष बढ़ गई है।

इसमें प्रकाशित विवरण-पहले त्रैमासिक 'साहित्य' में छपे थे और उन्हीं विवरणों की एक हजार प्रतियाँ इस पुस्तिका के लिए अलग छपवा ली गई थीं। इसीलिए विभागाध्यक्ष के सम्पादकीय वक्तव्य में 'साहित्य' के मुद्रित पृष्ठों की सामग्री यथातथ रूप में ही रह गई। उससे पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम या सन्देह न होना चाहिए। प्रेस की उतावली और भूल के इस परिणाम से विवरण की प्रामाणिकता में कोई बाधा नहीं पड़ती।

इसमें बिहार के जो सत्रह ग्रन्थकार हैं, उनके जीवन-परिचय और उनकी रचनाओं के जुने उदाहरण 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' नामक पुस्तक में प्रकाशित होंगे। बिहार के विद्वद्विद्यालयों के प्राध्यापकों और स्नातकों को इन सत्रह साहित्यकारों के सम्बन्ध में विशेष गवेषणा-कार्य करना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों के आधार पर बिहार में जो शोधकार्य हुए हैं और हो रहे हैं, उनका अधिकांश श्रेय बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् को ही है। साहित्यिक अन्वेषण के प्रथम परिणामस्वरूप परिषद् ने ही एक ग्रन्थ प्रकाशित किया, जो बिहार के सन्त-कवि दरियादास के सम्बन्ध में है और जिसके प्रणेता हमारे इस अनुसन्धान-विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉक्टर धर्मन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री हैं। परिषद् ने पुनः उन्हीं की दूसरी पुस्तक ( सन्त-मन का सरसंग-सम्प्रदाय ) भी प्रकाशित की है, जो इसी विभाग द्वारा किये गये अनुसन्धान-कार्य का परिणाम है। इस दूसरी पुस्तक में अधिकतर सन्त-कवि बिहार के ही हैं। परिषद्-सदस्य डॉक्टर शास्त्री इसी विभाग के संग्रह से लाभ उठाकर बिहार के सन्त-कवि सूरजदास के एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ 'रामजन्म' पर अपना अध्ययन उपस्थित करनेवाले हैं। दत्तमान विभागाध्यक्ष आचार्य नख्तिनजी भी भक्त कवि लालचदास के दो प्राप्त ग्रन्थों - 'हरिचरित' और 'विष्णुपुण्य' तथा बिहार के सूफ़ी कवि शैल किशायतुल्ला के प्रेमाख्यान काव्य 'दिवापर' का अनुशीलन कर रहे हैं। इन दोनों बिहारी कवियों पर आपके गवेषणात्मक निबन्ध तथा आपके द्वारा सम्पादित पाठान्तर-सहित मूल ग्रन्थ त्रैमासिक 'साहित्य' में प्रकाशित हो रहे हैं। आशा है कि परिषद् के इस विभाग का उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ ग्रन्थ-संग्रह हिन्दी-साहित्य के शोधकार्य को निरन्तर प्रगतिशील बनाना रहेगा। हमें विश्वास है कि इस विभाग के अध्यक्ष के तत्त्वावधान में उपर्युक्त अनुसन्धायक-द्वय जैसी लगन में काम कर रहे हैं, उससे भविष्य में अधिकाधिक शोध-सामग्री हिन्दी-जगत् को प्राप्त होगी।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी,  
शकाब्द १८८१

}

शिवपूजनसहाय  
संचालक



## विषयानुक्रम

विहार राष्ट्रमाधा-परिपद् में संगृहीत हिन्दी की प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (सम्पादकीय)	...	...	१-४
निर्गुण भक्ति-काव्य	...	...	१-६
भक्ति-काव्य	...	...	६-३०
काव्य	...	...	३०-३४
स्रुट-काव्य	...	...	३४-३५
चरित-काव्य	...	...	३५-३६
काव्य-शास्त्र	...	...	३६-३८
दृन्द-शास्त्र	...	...	३८
व्यौतिष	...	...	३८-३९
दर्शन	...	...	३९
कामशास्त्र	...	...	३९-४०
कोप	...	...	४०
धर्म	...	...	४०
धर्मशास्त्र	...	...	४०-४१
स्तोत्र	...	...	४१-४२
इतिहास	...	...	४२
तन्त्र	...	...	४२-४३
चिकित्सा	...	...	४३
कथा	...	...	४३-४४
गीति-नाट्य	...	...	४४
उपन्यास	...	...	४४
जीवन-चरित्र	...	...	४४
भूगोल	...	...	४४
पत्र	...	...	४४
परिशिष्ट—१ अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ	...	...	४७-५०
परिशिष्ट—२ ग्रन्थों की अनुक्रमणिका	...	...	५१-५५
ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका	...	...	५६-५८
परिशिष्ट—३ विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल	...	...	५९
परिशिष्ट—४ महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का समय तथा अन्य प्रकाशित खोज- विवरणों में उनके उल्लेख का विवरण	...	...	६०





# संकेत-विवरणा

ई०—	ईशवी
वि०—	विक्रमाद
फ०—	फसली सन्
आ०—	आकार
सं०—	संख्या
ग्रं०—	ग्रन्थकार
र० का०—	रचनाकाल
लि० का०—	लिपिकाल
दे०—	देखिए
खो० वि०—	खोज-विवरण
ना० प्र० स० का०—	नागरी-प्रचारणी सभा, काशी
ग्रं० सं०—	ग्रन्थ-संख्या
पृ० सं०—	पृष्ठ-संख्या
वि० र० भा० प०—	विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
स० सं०—	सरोज-संख्या



## बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में संगृहीत हिन्दी की प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

सम्पादक : प्रो० नलिनविलोचन शर्मा

शोध-सहायक : श्रीरामनारायण शास्त्री : श्रीदामोदर मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग, पोथियों के संग्रह आदि के अतिरिक्त, सन् १९५१ ई० के फरवरी मास से प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण के प्रस्तुतीकरण में संलग्न रहा है। मार्च, १९५८ ई० तक की खोज के परिणामस्वरूप विभाग में ३२७३ प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ संगृहीत हो चुकी हैं, जिनमें संस्कृत की प्रायः २५८५; हिन्दी की ५९३; बँगला और गुज्जुली-लिपियों में क्रमशः ५ और ३ पोथियाँ हैं। इनमें से १५१ हस्तलिखित पोथियों (हिन्दी १००, संस्कृत ५१) के विवरण तथा उनके रचयिताओं के संक्षिप्त परिचय 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (प्रथम खण्ड) में प्रकाशित हो चुके हैं। दूसरे खण्ड में मन्मूढाल पुस्तकालय (गाया) की १०६ और चैतन्य-पुस्तकालय (गायघाट, पटनासिटी) की २१ पोथियों के विवरण प्रकाशित हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी की ५० हस्तलिखित पोथियों के विवरण त्रैमासिक 'साहित्य' में क्रमशः प्रकाशित हुए हैं जिन्हें तीसरे खण्ड के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

संस्कृत की संगृहीत समस्त पोथियों के विवरण भी तैयार हैं। उनमें से विशेष महत्त्वपूर्ण पोथियों के विवरण ही सम्प्रति प्रकाशित किये जायेंगे।

'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' के प्रस्तुत खण्ड में परिषद् के शोध-विभाग में संगृहीत १०२ ज्ञात ग्रन्थकारों की ३०७ हस्तलिखित हिन्दी-पोथियों के विवरण है। इनके अतिरिक्त अज्ञात ग्रन्थकारों की ६२ हिन्दी-पोथियों के विवरण भी है। इनमें ऐसे ८१ नये ग्रन्थकार हैं, जिनका उल्लेख परिषद् द्वारा पूर्व-प्रकाशित विवरणों में नहीं है। यहाँ पाद-टिप्पणियों में यथास्थान उनके सम्बन्ध में ज्ञात सूचनाएँ उद्धृत कर दी गई हैं। निम्नलिखित नवोपलब्ध सत्रह ग्रन्थकारों का संक्षेप उल्लेख असमीचीन नहीं होगा—

१. कान्हजी सहाय—कवि घनारंग के समकालीन; शाहाबाद जिला-निवासी; अट्टारहवीं शती में वर्तमान; भक्तकवि; सङ्गीत के साधक। ये कीर्तन करते थे और स्वरचित गीतों को गाते हुए आनन्द-विभोर हो जाते थे। इनके सम्बन्ध की सूचनाएँ घनारंगजी के वंशज श्रीसहदेव मल्लिक, धनगाई' (सूर्यपुरा, शाहाबाद)-निवासी से प्राप्त हुई हैं।
२. गोपालजी लाल—कवि बच्चू मल्लिक के समकालीन; सङ्गीतज्ञ कवि; हुमराँव-महाराज के आश्रित। स्फुट रचनाएँ तथा गीत मिलते हैं।
३. गोस्वामी गोवर्धनलाल—गोस्वामी हितहरिवंश के वंशज; हितहरिवंश नापी-भवन (साँवलियाजी का मन्दिर, लल्लूदाद का कूचा, पटनासिटी) के अधिष्ठाता; 'प्रेम-प्रभा' के रचयिता; 'कविचूडामणि' उपाधि; 'प्रेम-पुष्प' नाम की पत्रिका के सम्पादक, चौदह भाषाओं के ज्ञाता।
४. घनारंग—हुमराँव-महाराज महेश्वरबल्यसिंह के आश्रित; बच्चू मल्लिक के पितृव्य; धनगाई'-निवासी; उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में वर्तमान; कृष्णभक्त कवि; कृष्ण-रामायण और ब्रज-विलास के रचयिता। कहा जाता है, ये अपनी रचनाएँ दीवार पर लिख दिया करते थे, और इनके भ्रातृज बच्चू मल्लिक उसे बाद में कागज पर लिख लेते थे। इनके रचे अनेक गीत शाहाबाद में आज भी गाये जाते हैं।
५. जैरामदास—शाहाबाद जिलान्तर्गत जोगिया (काथ के निकट) ग्राम-निवासी; वसन पाण्डेय के पुत्र; सरयूपारीण ब्राह्मण; अट्टारहवीं शती में वर्तमान; घराँव पहाड़ी पर इनका चरण-चिह्न अङ्कित है, जिसकी पूजा होती है तथा वर्ष में एक बार मेला लगता है। इनकी चौबीस रचनाएँ खोज में मिली हैं। सन्त कवि रघुनाथदास, सीतारामदास और हनुमानसरनदास इनके वंशज थे। सहसराम के श्रीराधारमण शर्मा, बकील इनके जीवित वंशज हैं। इनके दो पुत्रियाँ थीं, जो इनके रचे ग्रन्थों को लिपिवद्ध किया करती थीं। इनकी रचनाओं के अन्त में निम्नोद्धृत पंक्तियाँ समान रूप से मिलती हैं—

'वैदेही दस्तखत कियो सन्मुख पवनकुमार।

जैराम की नन्दिनी भव-जल उतरो पार ॥'

कहा जाता है, पकड़ी का वह वृक्ष आज भी है, जिसके नीचे बैठकर ये योग तथा

साहित्य की स्थापना करते थे। इनके सम्बन्ध की अनेक किंवदन्तियाँ उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं।

६. तुल्यगाम—वेतिया-राज्य के आश्रित कवि; प्रसिद्ध केचवदास के समकालीन; कहा जाता है, केचवदास ने इनकी मित्रता थी। चम्पारन जिला (बैंगरी ग्राम)-निवासी श्रीगणेश चौधरी से ज्ञान हुआ है कि जीवन्त में ये कुन्ठ रोग से ग्रस्त हो गये थे, उसी समय इन्होंने सूर्यस्तुतिपरक ग्रन्थ रचे थे।
७. देवीदास—रामगढ़ के राजा दलेल सिंह के आश्रित; पटुमनदास के समकालीन; जाति के अश्वत्थ कायस्थ; पारद-चरितार्णव के रचयिता।
८. दिगम्बर दूबे—शाहाबाद जिला-निवासी; हुमराँव-महाराज राधाप्रसादमिह के राजकवि; धनारंग तथा बच्चू मल्लिक के समकालीन; उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्तमान; स्फुट गीतों के रचयिता।
९. बच्चू मल्लिक—धनारंग के भ्रातृभ; हुमराँव-राज्य के आश्रित सङ्गीतज्ञ कवि; उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्तमान; अपने समय के भारत-विलयात गायक धनारंग के समकालीन; ब्राह्मण; रस-प्रकाश, भैरव-प्रकाश, स्वर-प्रकाश आदि ग्रन्थों के रचयिता; प्रकाशित कृति—कृष्ण-चरित; अनेक रचनाएँ अप्रकाशित हैं; इनके अनेक गीत सूरपुरा और हुमराँव के समीपस्थ क्षेत्रों में आज भी गाये जाते हैं।
१०. घेनीराम—हजारीबाग जिलान्तर्गत ईचाक-ग्राम-निवासी; रामगढ़-राज्य के आश्रित कवि; अट्टारहवीं शती के अन्त में वर्तमान।
११. मिनकराम—सरनङ्ग-सम्प्रदाय के सन्त; उक्त सम्प्रदाय की एक शाखा के प्रवर्तक; सरनङ्ग-सम्प्रदाय पर डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री-लिखित पुस्तक परिषद् से शीघ्र ही प्रकाशित होगी।
१२. मधुकवि—छपरा जिलान्तर्गत पलुई-ग्राम-निवासी, लगभग सत्रह ग्रन्थों के रचयिता; जन्म १६१७ वि०; मृत्यु २००५ वि०।
१३. महादेव हलवाई—शाहाबाद जिला-निवासी; कान्दोजीसहाय के शिष्य; गीतकार और गायक; हुमराँव-महाराज राधाप्रसादमिह के आश्रित। इनके स्फुट गीत खोज में मिले हैं।
१४. मुकुट दूबे—बच्चू मल्लिक के समकालीन; हुमराँव-राज्य के आश्रित; स्फुट गीतों के रचयिता।
१५. रघुवीर नारायण—जयागाँव, सारन, के निवासी; बनौली-महाराज कोस्पांतन्द सिंह के आश्रित; अँगरेजी, हिन्दी और भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि; जन्म १८८४ ई०; मृत्यु १९५५ ई०। इनकी समस्त प्राप्य कृतियाँ तथा हस्तलेख विहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अनुगोलन-विभाग में संगृहीत हैं।
१६. लक्ष्मीसखी—अमरौर, सारन-निवासी; सखी-सम्प्रदाय के अनुयायी; सं० १९७० वि० में वर्तमान; मृत्यु १९१४ ई०।

१७. शिवकुमार शास्त्री—भभुआ, गाहावाड़-निवासी; १९७० वि० के लगभग वर्तमान;  
 पद्यमय वीर अर्जुन के रचयिता; कुँवरसिंह पर संस्कृत-महाकाव्य (अप्रकाशित)  
 भी इनकी रचना है, जो परिपद् में संगृहीत है।

परिपद् के द्वारा प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पौधियों का विवरण (दो खण्ड)  
 में यथासम्भव विस्तार के साथ पौधियों के विवरण दिये गये हैं। मैंने इसके विपरीत यही  
 उपादेय समझा है कि परिपद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग में संगृहीत सभी  
 हिन्दी-पौधियों के संक्षिप्त, किन्तु सारगर्भ विवरण अविलम्ब प्रस्तुत किये जायँ। इनमें जो  
 विशेष महत्त्व के हैं, उनके पाठ-सम्पादन तथा सर्वविस्तार अध्ययन की योजना भी बनाई  
 गई है और कार्यारम्भ हो चुका है। इसी योजना के अन्तर्गत लालचन्द्रास तथा अद्यावधि  
 अज्ञात सूफ़ी कवि किराणयत पर विभाग में कार्य हो रहा है। पहले की कृति, हरिचरित, के  
 सम्पादित पाठ का एक अंग और दूसरे का परिचय 'साहित्य' के प्रस्तुत अङ्क में दिये जा  
 रहे हैं।

जिन पाण्डुलिपियों के ग्रन्थकार अज्ञात हैं अथवा खण्डित अवस्था में प्राप्त होने के  
 कारण जो पाण्डुलिपियाँ विवरण-सापेक्ष हैं, उनके सम्बन्ध में परिपद् का हस्तलिखित  
 ग्रन्थालुसन्धान-विभाग सूचनाओं का स्वागत करेगा।

जिन उदार विद्याचुरागियों से परिपद् को दुर्लभ पौधियाँ प्राप्त हुई हैं, उनके प्रति  
 हम परिपद् की ओर से कृतज्ञता-ज्ञापन करते हैं। हमें आशा है, राज्य के साहित्यप्रेमी  
 प्राध्यापक, शिक्षक, सरकारी पदाधिकारी, छात्र तथा अन्य कार्यों में संलग्न व्यक्ति भी, अपना  
 कर्तव्य समझकर, प्राचीन पौधियों के संग्रह और सुरक्षा में परिपद् की सहायता करेंगे।

पाण्डुलिपियों के संग्रह, वर्गीकरण, विवरण-लेखन आदि कार्यों में परिपद् के विभागीय  
 शोध-सहायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने उत्साह, तत्परता और योग्यता का परिचय  
 दिया है। विभाग के दूसरे शोध-सहायक श्रीदामोदर मिश्र ने परिश्रम तथा योग्यता के  
 साथ इन कामों में हाथ बँटाया है।

## निर्गुण भक्ति-काव्य

- १५१—गोरख गोष्ठी । ग्रन्थकार—कवीरदास । लिपिकार—X । रचनाकाल—प्रसिद्ध ।  
लिपिकाल—X । पत्र-संख्या—१० । दशा—सप्तदश । आ०—६'६" X ५'२" ।  
लिपि—नागरी ।
- १५२—जंजीरा । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१६ । दशा—सप्तदश । आ०—६'६" X ५'२" । लिपि—नागरी ।
- १५३—पुण्य महात्म । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गोविन्ददास । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१२८४ फ० = १६३३ वि० । पत्र-सं०—२० । दशा—पूर्ण । आकार—  
६'१४" X ४'८" । लिपि—नागरी ।

- १५४—सरौदे । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गरभृदास । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६५६ वि० । पत्र-सं०—१८ । दशा—पूर्ण । आकार—८"७" × ६"१२" । लिपि—नागरी ।
- १५५—बीजक । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गोपालदास । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१२६१ फ० = १६४० वि० । पत्र-सं०—२०० । दशा—पूर्ण । आ०—६" × ४" । लिपि—नागरी ।
- १५६—बीजकुरमैनी । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२० । दशा—पूर्ण । आ०—६"६" × ४"४" । लिपि—नागरी ।
- १५७—साखी । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१२७५ फ० = १६२४ वि० । पत्र-सं०—८३ । दशा—संगिद्धत, जीर्ण । आ०—१०" × ४.१३" । लिपि—कैथी ।
- १५८—पंचमुद्रा । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गरभृदास । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६६६ वि० । पत्र-सं०—५७ । दशा—पूर्ण । आ०—८.८" × ६.१२" । लिपि—नागरी ।
- १५९—निर्भयज्ञान । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२६ । दशा—संगिद्धत, जीर्ण । आ०—७"५" × ५" । लिपि—कैथी ।
- १६०—(क) हनुमानवोध, (ख) निरंजनगोष्ठी, (ग) मूलग्यान । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गंगाभगत । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०० वि० । पत्र-सं०—६१ । दशा—पूर्ण । आ०—५"४" × ३"१०" । लिपि—कैथी ।
- १६१—(क) कवीरगोष्ठी, (ख) जंगी समाज, (ग) सरदंग सागर । ग्रं०—कवीरदास । लि०—गंगाभगत । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०१ वि० । पत्र-सं०—१०६ । दशा—पूर्ण । आ०—५"४" × ३"१२" । लिपि—कैथी ।
- १६२—(क) ग्यान सागर, (ख) धरमदास वोध, (ग) कवीर गोरख गोष्ठी, (घ) सेख तक्री के गोष्ठी । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१२६१ फ० = १६१० वि० । पत्र-सं०—६१ । दशा—पूर्ण । आ०—८.८" × ५"४" । लिपि—कैथी ।
- १६३—लोकपांजी ( कवीर और धर्मदास की गोष्ठी ) । ग्रं०—कवीरदास । लि०—X । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२३ । दशा—पूर्ण । आ०—६"१२" × ४"८" । लिपि—नागरी ।
- १६४—गरभावली ( गोरख और कवीर की गोष्ठी ) । ग्रं०—कवीरदास । लि०—मोहनदास । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६३४ वि० । पत्र-सं०—४२ । दशा—पूर्ण । आ०—६"१२" × ४"८" । लिपि—नागरी ।
- १६५—कवीर के भक्तिमाल की टीका (१) । ग्रं०—कवीरदास । लि०—हरगोविन्द-

- दाम । र० का०—ग्रामिद्ध । लि० का०—१६३६ वि० । पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण ।  
 आ०—६०३"×४" । लिपि—नागरी ।
- १६६—तीनों बानी । सं०—शिवनारायण दास । लि०—x । र० का०—x ।  
 पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—७०१"×६"३" । लिपि—नागरी ।
- १६७—गाढ़ी बिलाम । सं०—शिवनारायणदास । लि०—x । र० का०—x । लि०  
 का०—x । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—७०१"×६"३" । लिपि—नागरी ।
- १६८—शाब्द । सं०—शिवनारायण दास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
 पत्र-सं०—२३ । दशा—पूर्ण । आ०—७०१"×६"२" । लिपि—नागरी ।
- १६९—संन सरन । सं०—शिवनारायणदास । लि०—x । र० का०—x । लि०  
 का०—x । पत्र सं०—२ । दशा—स्वयिद्धत । आ०—७०६"×६" । लिपि—नागरी ।
- १७०—संन सुंदर । सं०—शिवनारायणदास । लि०—x । र० का०—x । लि०  
 का०—x । पत्र-सं०—४० । दशा—पूर्ण । आ०—७०१"×६"३" । लिपि—  
 नागरी ।
- १७१—(क) संन सरन, (ख) संन बिलाम, (ग) संन सुंदर । सं०—शिवनारायण दास ।  
 लि० x । र० का०—x । लि० का०—१६११ वि० । पत्र-सं०—१३४ ।  
 दशा—स्वयिद्धत । आ०—८०६"×६"६" । लिपि—नागरी ।
- १७२—दरियादास । सं०—दरियादास । लि०—ठाकुरदास । र० का०—x । लि०  
 का०—१६०३ वि० । पत्र-सं०—८४ । दशा—स्वयिद्धत । आ०—८"×६"४" ।  
 लिपि—नागरी ।
- १७३—ज्ञानदीपक । सं०—दरियादास । लि०—शोधदास । र० का०—x । लि०  
 का०—१६६६ वि० । पत्र-सं०—१५६ । दशा—पूर्ण । आ०—९०८"×६"२" ।  
 लिपि—नागरी ।
- १७४—ज्ञानदीपक । सं०—दरियादास । लि०—बलिरामदास । र० का०—x । लि०  
 का०—x । पत्र-सं०—१३४ । दशा—पूर्ण । आ०—९०४"×६" । लिपि—नागरी ।
- १७५—प्रेममूला—सं०—दरियादास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
 पत्र-सं०—२८ । दशा—स्वयिद्धत । आ०—८"×६"८" । लिपि—नागरी ।
- १७६—प्रेममूला—सं०—दरियादास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
 पत्र-सं०—३ । दशा—स्वयिद्धत । आ०—०"×५"४" । लिपि—नागरी ।
- १७७—ज्ञानमूला—सं०—दरियादास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
 पत्र-सं०—३० । दशा—स्वयिद्धत । आ०—८"×६"८" । लिपि—नागरी ।

१—शिवनारायणजी मण के प्रवर्तक, गांधीपुर जिला-निवासी, सं० १७९२=१८११ ई० के छगमग  
 वर्तमान; नागरी-प्रचारिणी समा (काशी) को भी इनकी रचना खोज में मिली है ।  
 दे०—डॉ० वि० १९०९-११, सं० धं० २५४ प०, बो० सी० दो० भीरू ई० ।



- १७८—ब्रह्मविवेक—ग्रं०—दरियादास। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
 पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—७" X ५"। लिपि—नागरी।
- १७९—ब्रह्मविवेक। ग्रं०—दरियादास। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
 पत्र-सं०—३२। दशा—पूर्ण। आ०—८" ११" X ६" २"। लिपि—नागरी।
- १८०—निरतेश्वर। ग्रं०—परमसाहब<sup>२</sup>। लि०—हरगोविन्ददास। र० का०—X।  
 लि० का०—१२६४ फ० = १६४३ वि०। पत्र-सं०—५७। दशा—पूर्ण। आ०—  
 ६" ६" X ४"। लिपि—नागरी।
- १८१—ज्ञानगोष्ठी। ग्रं०—गोरखनाथ<sup>२</sup>। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
 पत्र-सं०—२। दशा—पूर्ण। आ०—११" X ५" ८"। लिपि—नागरी।
- १८२—ज्ञानस्वरोदय। ग्रं०—चरनदास<sup>४</sup>। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—  
 १६२४ वि०। पत्र-सं०—२१। दशा—पूर्ण। आ०—६" ६" X ५" २"। लिपि—  
 नागरी।
- १८३—ज्ञानस्वरोदय। ग्रं०—चरनदास। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—  
 १८६३ वि०। पत्र-सं०—८। दशा—पूर्ण। आ०—८" X ६"। लिपि—नागरी।
- १८४—कवित्त रामायण और कुण्डलिया<sup>५</sup>। ग्रं०—पलदूदास<sup>६</sup>। लि०—जगरूपदास।  
 र० का०—X। लि० का०—१३१४ फ० = १६६३ वि०। पत्र-सं०—५९  
 (अन्य रचनाएँ ६१ पृष्ठों में)। दशा—खण्डित। आ०—८" X ४" १२"।  
 लिपि—नागरी।

- १—शाहाबाद (बिहार)-निवासी; जन्म—१७३१ वि०; मृत्यु १८३७ वि०; पोरनशाह के पुत्र;  
 दरियापन्थ के प्रवर्तक।
- २—इस नाम के दो कबीरपन्थी साधु हो चुके हैं। दोनों का रचना-काल सं० १८८५ और  
 १८९४ वि० हैं। एक खेड़ाया के महन्थ थे और दूसरे नगम्परिया-निवासी बुरहानपुर के  
 महन्थ के शिष्य थे। दे०—नागरी-प्रचारिणी समा (काशी) का खोज-विवरण १९०१,  
 ग्रं० सं० ६५ और १९०६, ग्रं० सं० २०९।
- ३—गोरखपन्थी सम्प्रदाय के प्रवर्तक; सं० १४०७ वि० के लगभग वर्तमान।
- ४—सुखदेव के शिष्य; दहरा (अलवर, राजपूताना)-निवासी; जाति के धूसरबनिया; सं० १७६० वि०  
 के लगभग वर्तमान। दे०—का० ना० प्र० समा का हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त  
 विवरण (पहला भाग), पृ० सं० ४३।
- ५—इस जिनद में कबीरदास (फगुआ), तुलसीदास (होली) के स्फुट पद तथा नवोपलब्ध कवि  
 हरप्रसाद, दरसनराम, शंकरदास के कवित्त वादि हैं और बोधिदास का झलना ( १३ पृष्ठ  
 तथा ६६ पद ) भी है।
- ६—कबीर-पन्थ के अनुयायी; अयोध्या-निवासी; अठारहवीं शताब्दी में वर्तमान।

- १२५—भक्ति जैमाल । ग्रं०—शिवाराम<sup>१</sup> । लि०—X<sup>१</sup> । र० का०—X । लि० का०—X । (सरमङ्ग-सम्प्रदाय) । पत्र-सं०—२६६ । दया—खण्डित । आ०—१२" X ६" । लिपि—नागरी ।
- १२६—भक्ति जैमाल । ग्रं०—शिवाराम । लि०—रामनाथ । र० का०—X । लि० का०—१८६२ वि० । (सरमङ्ग-सम्प्रदाय) । पत्र-सं०—४६४ । दया—खण्डित । आ०—६"X६" । लिपि—नागरी ।
- १२७—विवेकसार । ग्रं०—किनाराम<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१८७७—वि० । पत्र-सं०—३३ । दया—पूर्ण । आ०—१०"X४" । लिपि—नागरी ।
- १२८—विचारमाला । ग्रं०—अनाथदास<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—१७०६ वि० । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—१२ । दया—पूर्ण । आ०—१०"१०"X५" । लिपि—नागरी ।
- १२९—सहज प्रकाश । ग्रं०—सहजो धार्ड<sup>४</sup> (चरनदास की शिष्या) । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१० । दया—खण्डित । आ०—८"X५" । लिपि—नागरी ।
- १३०—सत्तनाम । ग्रं०—मिनकराम<sup>५</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१८ । दया—पूर्ण । आ०—६"४"X५" । लिपि—कैथी ।
- १३१—निरगुन । ग्रं०—गोपालजी छाल । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—३ । दया—खण्डित । आ०—८"१०"X६" । लिपि—कैथी ।
- १३२—सारविवेक । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१७ । दया—खण्डित । आ०—७"१०" X ५" । लिपि—कैथी ।
- १३३—भजन निर्गुन<sup>६</sup> । ग्रं०—X । लि०—सन्तपति साहेब । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—२५ । दया—खण्डित । आ०—७"११"X६" । लिपि—कैथी ।

१—सरमङ्ग-सम्प्रदाय के सन्त; काशी-निवासी; सं० १७८७ के लगभग वर्तमान ।

२—रामनगर (वाराणसी)-निवासी; रामरसाल के प्रत्यकार; सरमङ्ग-मन के साधु । काशी के शिवाळा-घाट में इनका मठ प्रसिद्ध है । गोसाईं नाम से इनके सम्बन्ध की अनेक किंवदन्तियाँ उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं ।

३—सं० १७२६ के लगभग वर्तमान; मौनोबाबा के शिष्य; 'जन अनाथ' नाम से प्रसिद्ध; नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी इनकी रचना खोज में मिली है । दे०—खो० वि० १९०६-८, प्र० सं० १२९ ए० और बी० ।

४—स्वामी चरनदास की शिष्या, सं० १८०० के लगभग वर्तमान; परीक्षितपुर (दिल्ली)-निवासीनी ।

५—बम्बाल (बिहार)-निवासी; सरमङ्ग-सन्त; सरमङ्ग-सम्प्रदाय के एक विशेष शाखा के प्रवर्तक ।

६—कबीरदास, हुजुरीदास तथा सरमङ्ग-सन्तों के हफुट पदों का संग्रह । आधुनिक लेख ।

१६४—धर्मसंवाद। ग्रं०—X। लि०—रामचन्द्र तिवारी। र० का०—X। लि० का०—१६२६ वि०। पत्र-सं०—३१। दशा—पूर्ण। आ०—८" X ५"४"। लिपि—नागरी।

१६५—सिद्धान्तसार। ग्रं०—रामप्रसाद दास<sup>१</sup>। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X। पत्र-सं०—१५। दशा—खण्डित। आ०—६"७" X ५"। लिपि—नागरी।

१६६—सतगुरु के लक्षण (गद्य में)। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X। पत्र-सं०—४। दशा—पूर्ण। आ०—८"१७" X ५"८"। लिपि—नागरी।

### भक्ति-काव्य

१६७—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—विश्वकृलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६२२ वि०। पत्र-सं०—३२२। दशा—पूर्ण। आ०—११"१२" X ६"। लिपि—नागरी।

१६८—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—फागूलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८८ वि०। पत्र-सं०—४४३। दशा—पूर्ण। आ०—६"१२" X ७"१२"। लिपि—नागरी।

१६९—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—X। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—X। पत्र-सं०—२६५। दशा—पूर्ण। आ०—१२" X ६"। लिपि—नागरी।

२००—रामचरित मानस (वा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गन्धर्वदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६०५ वि०। पत्र-सं०—१६५। दशा—खण्डित। आ०—८"६" X ६"। लिपि—नागरी।

२०१—रामचरित मानस (वा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—X। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—X। पत्र-सं०—३६०। दशा—पूर्ण। आ०—६"२" X ६"१३"। लिपि—नागरी।

२०२—रामचरित मानस (वा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—बंगीलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६०३ वि०। पत्र-सं०—४३६। दशा—खण्डित। आ०—१०" X ६"८"। लिपि—नागरी।

२०३—रामचरित मानस (वा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—लक्ष्मणदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८६० वि०। पत्र-सं०—१५६। दशा—पूर्ण। आ०—११" X ५"३"। लिपि—नागरी।

१—कवीरपन्थी साधु; सं० १८८५ के लगभग वर्तमान; इनकी पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं। दे०—'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग)—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा।

- २०४—रामचरित मानस (३० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाळ लाळ ।  
२० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६१७ वि० । पत्र-सं०—४८ । दया—पूर्ण ।  
आ०—१३"X८" । लिपि—नागरी ।
- २०५—रामचरित मानस (३० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गजराज सिंह ।  
२० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८७२ वि० । पत्र-सं०—३४६ । दया—पूर्ण ।  
आ०—८"८"X६" । लिपि—नागरी ।
- २०६—रामचरित मानस (अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । दया—खरिडित ।
- २०७—रामचरित मानस (अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाळ  
गुरुजी । २० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६२० वि० । पत्र-सं०—४६ । दया—  
खरिडित । आ०—१३"X८" । लिपि—नागरी ।
- २०८—रामचरित मानस (अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गुणानन्ददास ।  
२० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८०८ वि० । पत्र-सं०—२१ । दया—पूर्ण ।  
आ०—६"६"X४"८" । लिपि—नागरी ।
- २०९—रामचरित मानस (अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१०१ । दया—खरिडित । आ०—१०"X  
५"५" । लिपि—नागरी ।
- २१०—रामचरित मानस (अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२६ । दया—खरिडित । आ०—११"१०"X  
६"८" । लिपि—नागरी ।
- २११—रामचरित मानस (कि० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१७ । दया—पूर्ण । आ०—६"X५" ।  
लिपि—नागरी ।
- २१२—रामचरित मानस (लं० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—७५ । दया—खरिडित । आ०—११"८ X  
६"८" । लिपि—नागरी ।
- २१३—रामचरित मानस (मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२३ । दया—खरिडित । आ०—  
६"१०"X४"८" । लिपि—नागरी ।
- २१४—रामचरित मानस (३० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—६४ । दया—खरिडित । आ०—१०"X५"  
लिपि—नागरी ।
- २१५—रामचरित मानस (३० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । २० का०—

प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—८६ । दया—खण्डित । भा०—  
८"X५"८" । लिपि—नागरी ।

२१६—रामचरित मानस (उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—X । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—४८ । दया—खण्डित । भा०—११"१२"X  
४"१०" । लिपि—नागरी ।

२१७—रामचरित मानस (उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—किष्कन्दपाल ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८६३ वि० । पत्र-सं०—४६ । दया—खण्डित  
भा०—१८"X६"५" । लिपि—कैथी ।

२१८—रामचरित मानस (उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—X । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—६२ । दया—खण्डित । भा०—  
६"१०"X४" । लिपि—नागरी ।

२१९—रामचरित मानस (वा० अ० लं० उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—  
सम्मोदराम (?) । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८८१ वि० । पत्र-सं०—४६५ ।  
दया—पूर्ण । भा०—६"X६" । लिपि—नागरी ।

२२०—रामचरित मानस (अ० कि० सु० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—X ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१२३ । दया—खण्डित ।  
भा०—१२"X६" । लिपि—नागरी ।

२२१—रामचरित मानस (वा० अयो० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—X ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—२०० । दया—  
खण्डित । भा०—१२"X८"१४" । लिपि—नागरी ।

२२२—रामचरित मानस (वा० अयो० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—  
किष्कन्दपाल । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०१ वि० । पत्र-सं०—१६८ ।  
दया—पूर्ण । भा०—६"X६" । लिपि—कैथी ।

२२३—रामचरित मानस (अयो० उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—बलदेव दूबे ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६६७ वि० । पत्र-सं०—२१८ । दया—  
खण्डित । भा०—१०"४"X७"८" । लिपि—नागरी ।

२२४—रामचरित मानस (कि० सु० अ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—  
महाराजसिंह । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०४ वि० । पत्र-सं०—८० ।  
दया—पूर्ण । भा०—११"X६"८" । लिपि—नागरी ।

२२५—रामचरित मानस (सु० लं० उ० का०) । प्र०—गुलसीदास । लि०—जैमन्व-  
सिंह । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६४१ वि० । पत्र-सं०—२१५ ।  
दया—पूर्ण । भा०—१२"X८"८" । लिपि—नागरी ।

२२६—रामचरित मानस (अयो० अर० लं० सु० उ० का०) । प्र०—गुलसीदास ।  
लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१३३ । दया—  
खण्डित । भा०—१२"८"X१०"१२" । लिपि—नागरी ।

- २२०—रामचरित मानम' , घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र सं०—१०८ । दया—खण्डित । आ०—६"१०"X६"३" ।  
लिपि—नागरी ।
- २२८—रामायण । घं०—मुलसीदास । लि०—रघुवीरदास । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१६११ वि० । पत्र-सं०—४०८ । दया—पूर्ण । आ०—१४"X७"२" ।  
लिपि—नागरी ।
- २२६—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१६ । दया—खण्डित । आ०—११"१०"X५"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- २३०—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८५१ वि० । पत्र-सं०—६६ । दया—खण्डित । आ०—१२"X  
७"८" । लिपि—नागरी ।
- २३१—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१३८ । दया—खण्डित । आ०—१०"१४"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २३२—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—पुरम्भरसिद्ध । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८४४ वि० । पत्र-सं०—११६ । दया—पूर्ण । आ०—  
१०"X८" । लिपि—नागरी ।
- २३३—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२६ । दया—खण्डित । आ०—१०"X७" ।  
लिपि—नागरी ।
- २३४—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८८१ वि० । पत्र-सं०—३१ । दया—खण्डित । आ०—१२"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २३५—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—शालिग्राम पाण्डेय ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८६० वि० । पत्र-सं०—२४० । दया—पूर्ण ।  
आकार—६"१०"X५"१०" । लिपि—नागरी ।
- २३६—रामायण (वा० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४६६ । दया—पूर्ण । आ०—१०"८"X६"११" ।  
लिपि—नागरी ।
- २३७—रामायण (अयो० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८५६ वि० । पत्र-सं०—४७ । दया—खण्डित । आ०—  
१२"X५"८" । लिपि—नागरी ।
- २३८—रामायण (अयो० का०) । घं०—मुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।

लि० का०—१६६० वि० । पत्र-सं—१०१ । दगा—पूर्ण । आ०—१२.४"×६.८" ।  
लिपि—नागरी ।

२३६—रामायण (अयो० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७४ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—११.४"×५.२" ।

लिपि—नागरी ।

२४०—रामायण (अयो० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—राघोदास । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८५६ वि० । पत्र-सं०—८० । दगा—पूर्ण । आ०—  
१०"×६" । लिपि—नागरी ।

२४१—रामायण (अर० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—आत्माराम । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६२१ वि० । पत्र-सं०—१२ । दगा—पूर्ण । आ०—  
१३"×८.४" । लिपि—नागरी ।

२४२—रामायण (अर० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—३५ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—८.८"×४.१०" ।  
लिपि—नागरी ।

२४३—रामायण (अर० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—१०"×५.१२" ।  
लिपि—नागरी ।

२४४—रामायण (क्रि० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाल । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—७ । दगा—पूर्ण । आ०—१३"×८.४" ।  
लिपि—नागरी ।

२४५—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—६ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—६.४"×६" । लिपि—नागरी ।

२४६—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४५ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—१३"×५" ।  
लिपि—नागरी ।

२४७—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१७ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—१२"×६.४" ।  
लिपि—नागरी ।

२४८—रामायण (मु० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाल लाल । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६२१ वि० । पत्र-सं०—१६ । दगा—पूर्ण । आ०—  
१३"×८" । लिपि—नागरी ।

२४९—रामायण (मु० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—राघोदास । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१६६ । दगा—स्वगिद्धत । आ०—  
१२.४"×६.२" । लिपि—नागरी ।

- २५०—रामायण (मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—लोकनाथ । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६०० वि० । पत्र-सं०—४३ । दशा—स्वयिदत । आ०—  
१०" × ६" १०" । लिपि—नागरी ।
- २५१—रामायण (मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२४ । दशा—स्वयिदत । आ०—१०" × ६" १४" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५२—रामायण (मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२८ । दशा—स्वयिदत । आकार—६" ११" × ७" २" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५३—रामायण (मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—५० । दशा—पूर्ण । आ०—७" ११" × ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५४—रामायण (उ० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४६ । दशा—स्वयिदत । आ०—८" १४" × ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५५—रामायण (उ० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गुरुद्वार । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१६२२ वि० । पत्र-सं०—२७ । दशा—पूर्ण । आ०—१२" × ८" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५६—रामायण (उ० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१० । दशा—स्वयिदत । आ०—६" ८" × ४" १२" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५७—रामायण (उ० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१४ । दशा—स्वयिदत । आ०—१२" × ६" ४" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५८—रामायण (उ० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७ । दशा—स्वयिदत । आ०—६" १०" × ४" ५" ।  
लिपि—नागरी ।
- २५९—रामायण (पा० अयो० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—गुरमारी पाठक ।  
र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—२५७ । दशा—  
स्वयिदत । आ०—१३" ४" × १०" । लिपि—नागरी ।
- २६०—रामायण (अयो० अर० कि० मु० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—  
ठाकुरप्रसाद । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८८५ वि० । पत्र-सं०—३०६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—८" १०" × ६" ८" । लिपि—नागरी ।
- २६१—रामायण (सं० का०) । प्र०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।



- लि० का०—X । पत्र-सं०—२०४ । दशा—खण्डित । आ०—१२" X ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २६२—रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—२३ । दशा—खण्डित । आ०—६" X ६" X २" । लिपि—कैथी ।
- २६३—रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—४८७ । दशा—खण्डित । आ०—६" X ६" X ३" । लिपि—नागरी ।
- २६४—विनयपत्रिका (विनयपत्रिकासार नामक टीका-सहित) । ग्रं०—तुलसीदास ।  
लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—२२८ । दशा—  
खण्डित । आ०—१०" X ८" X २" । लिपि—नागरी ।
- २६५—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—तिलकदास । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—११७ । दशा—पूर्ण । आ०—८" X ६" X ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २६६—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२४७ । दशा—खण्डित । आ०—१०" X ८" X ८" ।  
लिपि—नागरी ।
- २६७—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१०० । दशा—खण्डित, जीर्ण । आ०—  
१०" X ८" X ५" । लिपि—नागरी ।
- २६८—हनुमान वाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१२७५ फ० = १६२४ वि० । पत्र-सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—  
८" X ५" X ४" । लिपि—नागरी ।
- २६९—हनुमान वाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१ । दशा—खण्डित । आ०—७" X २" X ३" X १०" ।  
लिपि—नागरी ।
- २७०—हनुमान वाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—११" X ५" X २" ।  
लिपि—नागरी ।
- २७१—छप्पै रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—शिवशरणलाल । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१६३४ वि० । पत्र-सं०—५७ । दशा—पूर्ण । आ०—८" X ५" X ४" ।  
लिपि—नागरी ।
- २७२—छप्पै रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०

१—इस जिल्द में (१) राधाकृष्ण-स्तवन (भगवानदास), (२) भजन (जगनराम),  
(३) सनेहलोला, (४) रावनाय महातम और शोदलीका नामक ग्रन्थ भी हैं ।

- का०—१६३५ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—स्त्रियद्वय, शीर्ष । आ०—  
५०१"×४०१" । लिपि—नागरी ।
- २७३—द्वयै रामायण । मं०—मुल्सीदास । लि०—शिवचरणलाल खत्री । १० का—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६४४ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—  
८०७"×५०७" । लिपि—नागरी ।
- २७४—द्वयै रामायण । मं०—मुल्सीदास । लि०—X । १० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—६०७"×४०४" । लिपि—नागरी ।
- २७५—गीतावली । मं०—मुल्सीदास । लि०—X । १० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१४ । दशा—स्त्रियद्वय । आ०—८"×५०८" । लिपि—नागरी ।
- २७६—गीतावली । मं०—मुल्सीदास । लि०—गोविन्ददास । १० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—६६ । दशा—पूर्ण । आ०—११"×४०८" ।  
लिपि—नागरी ।
- २७७—कवित्त रामायण । मं०—मुल्सीदास । लि०—हीरामणि मिश्र । १० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१६१२"×४" । लिपि—नागरी ।
- २७८—कवित्त रामायण । मं०—मुल्सीदास । लि०—शालिग्राम पायरेय । १० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६०८ वि० । पत्र-सं०—५२ । दशा—स्त्रियद्वय । आ०—  
१०८"×४०१२" । लिपि—नागरी ।
- २७९—रामगीतावली । मं०—मुल्सीदास । लि०—X । १० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—१८७६ वि० । पत्र-सं०—६६ । दशा—स्त्रियद्वय । आ०—६०४"×६" ।  
लिपि—नागरी ।
- २८०—रामलला नहछू । मं०—मुल्सीदास । लि०—लाला जगन्नाथसिद्ध । १० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१६५७ ई० । पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—  
७०८"×५०१२" । लिपि—नागरी ।
- २८१—कृष्णगीतावली । मं०—मुल्सीदास । लि० का०—X । १० का०—प्रसिद्ध ।  
पत्र-सं०—११ । दशा—स्त्रियद्वय । आ०—१२०६"×६०४" । लिपि—नागरी ।
- २८२—कवितावली । मं०—मुल्सीदास । लि०—X । १० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । दशा—स्त्रियद्वय ।
- २८३—मुल्सी सतसई । मं०—मुल्सीदास । लि०—पेतरराम । १० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१६०६ वि० । पत्र-सं०—२८ । दशा—पूर्ण । आ०—६०६"×७०१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- २८४—वैराग्यसंदीपनी । मं०—मुल्सीदास । लि०—हरिदास । १० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—१०११"×५०१२" ।  
लिपि—नागरी ।

- २८५—वैराग्यसंदीपनी । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—८१०”X ४८” ।  
लिपि—नागरी ।
- २८६—भरथविलाप । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—शीतलदास । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि०का०—१६११ वि० । पत्र-सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—६४”X ६”१२” ।  
लिपि—नागरी ।
- २८७—भरथविलाप । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—लाला अगन्नाथसिंह । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—२४ । दशा—पूर्ण । आ०—  
७८”X ५”१२” । लिपि—नागरी ।
- २८८—भरथविलाप । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—कनिकलाल । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१२७५ फ० = १६२४ वि० । पत्र-सं०—२७ । दशा—पूर्ण । आ०—  
७४”X ६” । लिपि—नागरी ।
- २८९—रामसप्तसई । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—  
१८८२ वि० । पत्र-सं०—१०५ । दशा—खण्डित । आ०—६४”X ४८” ।  
लिपि—नागरी ।
- २९०—मीनगीता । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—१२८”X ५”३” । लिपि—नागरी ।
- २९१—दोहावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—  
१६६६ वि० । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२४”X ४८” ।  
लिपि—नागरी ।
- २९२—त्रिसाती लीला । ग्रं०—प्रेमदास<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—  
१६३५ वि० । पत्र-सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—५”X ४२” ।  
लिपि—नागरी ।
- २९३—जैमिनी पुराण । ग्रं०—प्रेमदास<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१८० । दशा—खण्डित । आ०—१०”X ६”४” । लिपि—नागरी ।
- २९४—जैमिनी पुराण । ग्रं०—प्रेमदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।

१.—स्वामी रामानुज के अनुयायी; प्रेम-परिचय, भगवत बिहार-लीला और त्रिसातिन लीला के ग्रन्थकार; अजयगढ़-निवासी; सं० १८२७ के लगभग वर्तमान; श्रीकृष्णलीला के लेखक प्रेमदास से भिन्न; इनकी पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं ।—दे० खो० वि० १९०९-११, ग्रं०-२२९ ए०, बी० और सी० ।

२.—बलिया-निवासी; हाजीपुर (बिहार)-निवासी धरणीधर पंडित के यहाँ आश्रित । दे० बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' ।

पत्र-सं०—१६३ । दशा—खण्डित, जीर्ण । आ०—६'१०" × १०'४" ।  
लिपि—नागरी ।

२६५—शैवानन्द । सं०—दर्शन शर्मा । लि०—× । र० का०—१३०५ फ० = १६५४  
वि० । लि० का०—× । पत्र-सं०—६६ । दशा—पूर्ण । आ०—८'१२" × ५'४" ।  
लिपि—नागरी ।

२६६—प्रबोध पचासा । सं०—दर्शन शर्मा । लि०—× । र० का०—१६५७ वि० ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—३१ । दशा—पूर्ण । आ०—८'४" × ५" ।  
लिपि—नागरी ।

२६७—मिद्धान्तसार पोथी । सं०—रामप्रसाद । लि०—× । र० का०—× । लि०  
का०—× । पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ० १०" × ४'७" । लिपि—नागरी ।

२६८—भक्तमाल । सं०—प्रियादास<sup>२</sup> । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—  
१६०८ वि० । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—१३" × ६'१२" ।  
लिपि—नागरी ।

२६९—भक्तमाल की टीका । टीकाकार—रायनदास<sup>३</sup> । लि०—राघोदास । र० का०—× ।  
लि० का०—१८६२ वि० । पत्र-सं०—३ । दशा—खण्डित । आ०—१०" × ६" ।  
लिपि—नागरी ।

३००—रास पंचावली (संगीत) । सं०—घनारंग<sup>४</sup> । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—६'८" × ५'१२" ।  
लिपि—कैथी ।

३०१—घनारंग के गीत (संगीत) । सं०—घनारंग । लि० × । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—१८ । दशा—पूर्ण । आ०—११" × ६" ।  
लिपि—नागरी ।

३०२—कृष्ण रामायण (संगीत) । सं०—घनारंग । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—५६६ । दशा—खण्डित । आ०—८'४" × ५" ।  
लिपि—नागरी ।

१—नबोपलब्ध कवि; उसीसर्वी शती में वर्तमान; काशी के दर्शनलाल से मिष्ट ।

२—प्रसिद्ध नामादास के शिष्य; सं० १७६७ के लगभग वर्तमान; रसजनिदास के गुरु  
और वैष्णवदास के पिता । दे० खो० वि० (का० ना० प्र० सं०) १९०९—११,  
प्र० सं० ३२४ ।

३—नबोपलब्ध ग्रन्थकार; इनके सम्बन्ध की सूचना प्राप्त नहीं हुई है ।

४—शाहाबाद (बिहार) जिले के घनगईं ग्राम-निवासी; छपरा-राज्य के आश्रित कवि  
और सन्नीतश; मटारहरी शक्ती में वर्तमान । इनके सम्बन्ध की अनेक कियदन्तियाँ  
उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं ।

- ३०३—भजन संग्रह (स्फुट) । ग्रं०—घनारंग । लि०—सहदेव द्वे । र० का०—X ।  
लि० का०—१६५४ ई० । पत्र-सं०—१७ । दशा—खण्डित । आ०—  
८४” X ६८” । लिपि—नागरी ।
- ३०४—सुन्दर विलास । ग्रं०—सुन्दरदास<sup>१</sup> । लि०—सर्वानन्द । र० का०—X । लि०  
का०—१२८१ फ० = १६३० वि० । पत्र-सं०—१३ । दशा—खण्डित ।  
आ०—६४” X ३१” । लिपि—नागरी ।
- ३०५—ज्ञानसमुद्र । ग्रं०—सुन्दरदास<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—३५ । दशा—पूर्ण । आ०—८१२” X ५” । लिपि—नागरी ।
- ३०६—रज्जव की बानी । ग्रं०—रज्जव<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—६४” X ४६” ।  
लिपि—नागरी ।
- ३०७—सूरसागर । ग्रं०—सूरदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१०० । दशा—खण्डित । आ०—७१२” X ६” ।  
लिपि—नागरी ।
- ३०८—सूरसागर । ग्रं०—सूरदास । लि०—दौलतराम । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—३७८ । दशा—खण्डित । आ०—१२४” X ६८” ।  
लिपि—नागरी ।
- ३०९—भक्तमाल (सटीक) । ग्रं०—नाभादास<sup>४</sup> । टीका—नारायणदास । लि०—  
हरिभक्तदास । र० का०—१७६६ वि० । लि० का०—१७६६ वि० । पत्र-सं०—५८ ।  
दशा—खण्डित । आ०—८४” X ४” । लिपि—नागरी ।

१—दादूपन्थी सन्त; सं० १७४६ वि० के लगभग वर्तमान; जयपुर-निवासी; खण्डेलवाल  
वैश्य; शाहपूरनानन्द के पुत्र । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी लगभग  
बाईस रचनाएँ खोज में मिली हैं ।

२—घोसा (जयपुर-राज्य)-निवासी; दादूजी के शिष्य; सं० १७४६ वि० के  
लगभग वर्तमान ।

३—फारसी और हिन्दी के कवि; खोज में नवोपलब्ध; दोहों के सुप्रसिद्ध रचयिता के  
रूप में 'शुद्धार-संग्रह' में इनकी चर्चा हुई है । इनका जन्म-सं० १६२४ और  
मृत्यु-सं० १७४६ है । दे० 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (मूल लेखक  
डा० प्रियर्सन)—श्रीकेशरीलाल गुप्त (अनुवादक), पृ० ३२०, कवि-सं० ८९८;  
'शिवसिंह-संराज' की कवि-सं० ७७७ ।

४—अप्रदास के शिष्य; प्रियादास के गुरु; सं० १६५७ वि० के लगभग वर्तमान;  
ध्रुवदास के समकालीन । 'रामचरित्र के पद' नामक एक और इनकी रचना  
काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली है ।

- ३१०—गोविन्दलीलामृत । ग्रं०—दलेलसिंह<sup>१</sup> । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—२६५ । दशा—स्रष्टित । आ०—१०" x ७" १२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३११—मिवमागर । ग्रं०—दलेलसिंह । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—२६८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०" x ६" ४" । लिपि—नागरी ।
- ३१२—रामजनम<sup>२</sup> । ग्रं०—सूरजदास<sup>३</sup> । लि०—सामलाल राम । र० का०—x ।  
लि० का०—१६०२ वि० । पत्र-सं०—१२० । दशा—पूर्ण । आ०—७" ८" x ५" ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३१३—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—५७ । दशा—स्रष्टित । आ०—७" १०" x ५" ८" । लिपि—नागरी ।
- ३१४—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—कनकलाल । र० का०—x । लि०  
का०—x । पत्र-सं० ७३ । दशा—पूर्ण । आ०—७" x ६" । लिपि—नागरी ।
- ३१५—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—शीतलदास । र० का०—x ।  
लि० का०—१६१० वि० । पत्र-सं०—२६ । दशा—स्रष्टित । आ०—  
६" ४" x ६" १०" । लिपि—नागरी ।
- ३१६—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—४७ । दशा—स्रष्टित । आ०—८" ४" x ६" ८" । लिपि—नागरी ।
- ३१७—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—लाला जगन्नाथसिंह । र० का०—x ।  
लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—३५ । दशा—पूर्ण । आ०—७" ८" x ५" १४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३१८—अजुंनगीता । ग्रं०—कुशलसिंह<sup>४</sup> । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—६३ । दशा—स्रष्टित । आ०—६" x ५" । लिपि—नागरी ।
- ३१९—अजुंनगीता । ग्रं०—कुशलसिंह । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—२६ । दशा—स्रष्टित । आ०—८" १०" x ५" ४" । लिपि—कैथी ।

१—रामगढ़ (बिहार) राज्य के राजा; पदुमनदास और देवीदास आदि अनेक कवियों के  
आश्रयदाता; सत्रहवीं-शती में वर्तमान ।

इसी जन्म में—(१) सोनामाल ( ईश्वरदास-इसरदास ), (२) रामायण-लक्ष्मकाण्ड  
(तुलसीदास), (३) भरथविनाय (तुलसीदास), (४) गोपालगारी, (५) दानवीला,  
(६) भरथचरित्र और (७) नागलेला भी हैं ।

३—सूरजदास बिहार के कवि हैं। उनके हैं। रचनाकाल अज्ञान है। इनके सम्बन्ध में  
अनुसन्धान हो रहा है ।

४—सं० १६७७ वि० के लगभग वर्तमान, फर्रुद्द के राजा मधुकरशाह के पुत्र  
और कवि देवदत्त के आश्रयदाता कुशलसिंह से भिन्न ।

- ३२०—अर्जुनगीता । ०—कुशलसिंह<sup>१</sup>। लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—२७ । दशा—खगिद्धत । आ०—६"x५"४" । लिपि—नागरी ।
- ३२१—रामरतन गीता । ग्रं०—कुशलसिंह । लि०—पदारथदास । र० का०—x ।  
लि० का०—१६०४ वि० । पत्र-सं०—४४ । दशा—खगिद्धत । आ०—  
७"१२"x६" । लिपि—नागरी ।
- ३२२—अर्जुनगीता । ग्रं०—कुशलसिंह । लि०—शीतलदास । र० का०—x । लि०  
का०—१२६७ फ० = १६१६ वि० । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
६"४"x६"१०" । लिपि—नागरी ।
- ३२३—अद्भूत रामायण । ग्रं०—वेनीराम<sup>२</sup> । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—६ । दशा—खगिद्धत । आ०—१२"x४"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३२४—दुर्गास्तव । ग्रं०—वेनीराम । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—६ । दशा—खगिद्धत । आ०—६"४"x६"४" । लिपि—नागरी ।
- ३२५—सीतासौरभमंजरी । ग्रं०—वेनीराम । लि०—x । र० का०—x । लि०  
का०—x । पत्र-सं०—८ । दशा—खगिद्धत । आ०—१२"८"x४"१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३२६—सीतासौरभमंजरी । ग्रं०—वेनीराम । लि०—त्रिभुवनदास । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—८८ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"१२"x७"४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३२७—सीतासौरभमंजरी । ग्रं०—वेनीराम । लि०—शुकदेव शर्मा । र० का०—x ।  
लि० का०—१६७४ वि० । पत्र-सं०—१४८ । दशा—पूर्ण । आ०—११"x६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३२८—कालीमंगलमंजरी । ग्रं०—वेनीराम । लि०—x । र० का०—x । लि०  
का०—x । पत्र-सं०—१२५ । दशा—खगिद्धत । आ०—११"८"x५"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३२९—भजनावली । ग्रं०—लक्ष्मीपति<sup>३</sup> । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—६६ । दशा—खगिद्धत । आ०—११"x८"८" । लिपि—कैथी ।
- ३३०—भजन संग्रह । ग्रं०—लक्ष्मीपति (?) । लि०—x । र० का०—x ।

१—ईचाक ( हजारीबाग, बिहार )-निवासी; अष्टादशवीं शती के अन्त में वर्तमान ।

२—सं० १८८३ वि० के लगभग वर्तमान; जोधपुर-निवासी; रागविलास और भजन-  
विलास नामक दो अन्य रचनाओं के ग्रन्थकार; इनकी रचनाएँ ना० प्र० सं०  
(काशी) को भी खोज में मिली हैं । दे०—खो० वि० १९०२, ग्रं० सं०-२१, २३  
और खो०-वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० २५७ तथा पृ० सं० ५८ ।

- लि० का०—X । पत्र-सं०—२४० । दगा—खगिदत, खीर्ण । आ०—१२"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३३१—मुद्रामाचरित । प्र०—हलधरदास<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—४२ । दगा—खगिदत । आ०—६"१०"X७" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३३२—मुद्रामाचरित । प्र०—हलधरदाम । लि०—हीरामणि मिश्र । र० का०—X ।  
लि० का०—१७४६ गकाब्द । पत्र-सं०—४४ । दगा—पूर्ण । आ०—  
१२"४"X४"१२" । लिपि—नागरी ।
- ३३३—मुद्रामाचरित । प्र०—हलधरदास । लि०—मंगलमहाराज । र० का०—X ।  
लि० का०—१८६७ वि० । पत्र-सं०—७२ । दगा—पूर्ण । आ०—६"६"X५"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३३४—हरिचरित्र । प्र०—लालचदाम<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—३७० । दगा—खगिदत । आ०—६"X६" । लिपि—नागरी ।
- ३३५—हरिचरित्र । प्र०—लालचदाम । लि०—दामोदरमिश्र । र० का०—X । लि०—  
२०१० वि० । पत्र-सं०—४६८ । दगा—खगिदत । आ०—१३"X८"६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३३६—हरिचरित्र । प्र०—लालचदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—७० । दगा—खगिदत । आ०—५"८"X४"२" । लिपि—नागरी ।
- ३३७—हरिचरित्र । प्र०—लालचदाम । लि०—कतोहलदाम (?) । र० का०—X ।  
लि० का०—१८७६ वि० । पत्र-सं०—१७५ । दगा—खगिदत । आ०—  
११"X६" । लिपि—नागरी ।
- ३३८—भागवत भाषा । प्र०—लालचदाम । लि०—दामोदरमिश्र । र० का०—  
१५८५ वि० । लि० का०—२०१० वि० । पत्र-सं०—१७५ । दगा—पूर्ण ।  
आ०—१३"X८"६" । लिपि—नागरी ।
- ३३९—भागवत । प्र०—लालचदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१६ । दगा—खगिदत । आ०—६"४"X६" । लिपि—नागरी ।
- ३४०—सौंफ़ी । प्र०—गो० हितहरिचंघ<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।

१—मुद्रपत्रपुर (बिहार)-निवासी; १९वीं शती के आरम्भ में वर्तमान । कवि पर अभी अनुसन्धान नहीं हुआ है ।

२—बरेली-निवासी; सं० १५७७ वि० के लगभग वर्तमान ।

३—वृन्दावन-निवासी; सं० १५८०—१६२४ वि० तक के लगभग वर्तमान । बीकनोर के रायबच्छमे मन्त्रदाय के संस्कारक । दे०—'दस्तावेजिन हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (का० ना० प्र० समा), प्रथम भाग ।



- लि० का०—X । पत्र-सं०—३६६ । दशा—खगिदत । आ०—१०" X ७" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४१—वधाई । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१४० । दशा—पूर्ण । आ०—६"८" X ५"२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४२—चौरासां पद ( सेवक वानी ) । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८५७ वि० । पत्र-सं०—१५१ । दशा—खगिदत । आ०—  
५"७" X ३"१०" । लिपि—नागरी ।
- ३४३—चौरासी पद । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१२८ । दशा—खगिदत । आ०—६"८" X ३"४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४४—सेवक वानी ( सटीक ) । ग्रं०—हितहरिवंश । टीका—हरलाल गोस्वामी ।  
लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६२० वि० । पत्र-सं०—३४८ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१०"३" X ६"१४" । लिपि—नागरी ।
- ३४५—चौरासी वार्त्ता । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१७६ । दशा—पूर्ण । आ०—६"८" X ६" । लिपि—नागरी ।
- ३४६—दानलोला । ग्रं०—कृष्णदास<sup>१</sup> । लि०—कनिकलाल । र० का०—X । लि०  
का०—१२७५ फ० = १६२४ वि० । पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
७"३" X ६" । लिपि—नागरी ।
- ३४७—दानलीला । ग्रं०—कृष्णदास । लि०—लाला जगन्नाथसिंह । र० का०—X ।  
लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—३ । दशा—पूर्ण । आ०—७"८" X ५"१४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४८—दानलाला । ग्रं०—कृष्णदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—६"५" X ४"३" । लिपि—नागरी ।

१—अष्टलाप के कवि; 'पयाहरी' उपनाम से प्रसिद्ध; अग्रदास के गुरु; सं० १६०७ के लगभग वर्तमान; ना० प्र० सं० (काशी) की खोज में उपलब्ध कवि । दे० खो० वि० १९०६-८, प्र० सं० १२१, १२८ और खो० वि० १९०९—११, प्र० सं० ८१ और १०३ तथा खो० वि० १९२६—२८, प्र० सं० २४७, पृ० ५६ । मिश्रवन्धु ने इनका रचनाकाल १५७० के लगभग माना है । दे० मिश्रवन्धु-विनोद ( पंचम संस्करण, गंगा-ग्रन्थालय, लखनऊ, २००३ वि० ) पृ० १९५, कवि-सं० १२७ । प्रियर्सन के अनुसार इनका रचनाकाल सन् १५५० है और 'सरोज' के मत से १६०१ वि० है । दे० हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास ( श्रीकेशरीलाल गुप्त ), पृ० ८९ ।

- ३४६—रामायण (वा० का०) । प्र०—जैरामदास<sup>१</sup> । लि०—X । २० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४८ । दया—खण्डित । आ०—६४"X४"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४७—रामायण (वा० का०) । प्र०—जैरामदास । लि०—X । २० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४६ । दया—खण्डित । आ०—६२"X४"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४८—रामायण (उ० का०) । प्र०—जैरामदास । लि०—X । २० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४३ । दया—खण्डित । आ०—६"X४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३४९—रामायण (सु० का०) । प्र०—जैरामदास । लि०—भवदानदास । २० का०—X ।  
लि० का०—१८३६ वि० । पत्र-सं०—३६ । दया—पूर्ण । आ०—८"X४"३" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३५०—जगन्नाथ महात्म । प्र०—जैरामदास । लि०—चन्द्रमणि पाण्डेय । २० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—११५ । दया—खण्डित । आ०—८"८"X  
५"१०" । लिपि—नागरी ।
- ३५१—जगन्नाथ महात्म । प्र०—जैरामदास । लि०—X । २० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१३ । दया—खण्डित । आ०—७"६"X५" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३५२—कार्तिक महात्म । प्र०—जैरामदास । लि०—वैदेही । २० का०—X ।  
लि० का०—१८७० वि० । पत्र-सं०—४६ । दया—पूर्ण । आ०—८"X४"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३५३—कर्मविपाक । प्र०—जैरामदास । लि०—X । २० का०—X । लि० का०—  
१८५० वि० । पत्र-सं०—४ । दया—खण्डित । आ०—६४"X४"१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३५४—एकादशी महात्म । प्र०—जैरामदास । लि०—वैदेही । २० का०—X ।  
लि० का०—१८७० वि० । पत्र-सं०—६१ । दया—पूर्ण । आ०—८"X४"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३५५—महाभारत भाषा । प्र०—लक्ष्मणसेन<sup>२</sup> । लि०—X । २० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७५० । दया—खण्डित । आ०—६"X५"१२" ।  
लिपि—नागरी ।

१—जोगिया ( शाहाबाद, बिहार )-निवासी; अठारहवीं शती में वर्तमान ।

२—नवोपन्य कवि; ग्रन्थकार के सम्बन्ध में अन्य खोज-विद्वान्शिकार्यों में विशेष शर्चा  
नहीं मिलनी-है । काशी-नागरी-प्रचारिणी समा की भी यह रचना खोज में  
मिली है । दे०—छो० वि० १९०९—११, प्र०.सं० १६७ ।

- ३५६—दृधिलीला । ग्रं०—परमानन्ददास<sup>१</sup> । लि०—बलभद्रप्रसाद । र० का०—X ।  
लि० का०—१६३५ वि० । पत्र-सं०—८ । दशा—खगिदत । आ०—५"X४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३६०—रनेहलीला<sup>२</sup> । ग्रं०—जनमोहन<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१८ । दशा—पूर्ण । आ०—६"X४"X८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३६१—अमर फरास । ग्रं०—लक्ष्मीसखी<sup>४</sup> । लि०—मुरलीधर श्रीवास्तव ।  
र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—३६५ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१२"८"X७"८" । लिपि—नागरी ।
- ३६२—ध्यानमंजरी । ग्रं०—अग्रदाम<sup>५</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—  
१८६२ वि० । पत्र-सं०—२ । दशा—खगिदत । आ०—६"X४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३६३—पद्मावत । ग्रं०—मलिक मुहम्मद जायसी । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८८६ वि० । पत्र-सं०—३०८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"८"X७" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३६४—रसिकमाल । ग्रं०—उत्तमदास<sup>६</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—  
१८७४ वि० । पत्र-सं०—२३८ । दशा—पूर्ण । आ०—५"१२"X४"५" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३६५—सेवक वानी । ग्रं०—चाचा वृन्दावनदास<sup>७</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२ । दशा—खगिदत । आ०—६"३"X४"५" ।  
लिपि—नागरी ।

१—दौदा (मुक्तसर, पंजाब)-निवासी; सं० १९३५ वि० में वर्तमान ।

२—इस जिन्द के साथ दानलौला (छण्णदास-रचित) की हस्तलिखित पूर्ण प्रति है ।

३—जाति के ब्राह्मण; ओरछा (वृन्देखण्ट) के राजमन्दिर के पुजारी; सं० १८५१ वि० के लगभग वर्तमान ।

४—अमनौर (सारन, बिहार)-निवासी; सं० १९७० वि० में वर्तमान; सखी-मन के प्रवर्तक ।

५—आमेर (जयपुर)-निवासी; सं० १९३२ वि० में वर्तमान ।

६—हीरामणि मिश्र के पुत्र; सं० १७०६ वि० के लगभग वर्तमान । इनकी रचना काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली है । दे० खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं० ३४० ए० और बी० ।

७—वृन्दावन-निवासी; हितहरिवंश के अनुयायी; बलभ-सम्प्रदाय के वैष्णव, सं० १८०३ के लगभग वर्तमान ।

- ३३६—लीला । प्रं०—चाचा वृन्दावनदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—२८७ । दगा—समिहत, जीर्ण । आकार—६"१२" X ८"१०" । लिपि—नागरी ।
- ३३७—भागवत पद्यानुवाद । प्रं०—शिवकुमार शास्त्री<sup>१</sup> । लि०—शिवकुमार शास्त्री । र० का०—२००३ वि० । लि० का०—२००३ वि० । पत्र-सं०—१५५६ । दगा—पूर्ण । आ०—१०"१०" X ७" । लिपि—नागरी ।
- ३३८—कृष्णवन्दनशतक । प्रं०—जनभगवानदास<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१६६५ वि० । पत्र-सं०—८ । दगा—पूर्ण । आ०—६" X ४"१२" । लिपि—नागरी ।
- ३३९—प्रेमशतक । प्रं०—जनभगवानदास । लि०—X । र० का०—१६४७ वि० । लि० का०—X । पत्र-सं०—३३ । दगा—पूर्ण । आ०—६"४" X ४"१३" । लिपि—नागरी ।
- ३४०—भक्तिसूत्रभाषा । प्रं०—जनभगवानदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१६६३ वि० । पत्र-सं०—६ । दगा—पूर्ण । आ०—८"७" X ५"४" । लिपि—नागरी ।
- ३४१—वन गदातम<sup>३</sup> । प्रं०—जनभगवानदास । लि०—धर्मनाथसिंह<sup>४</sup> । र० का०—१८१७ वि० । लि० का०—१६५० वि० । पत्र-सं०—२५ । दगा—पूर्ण । आ०—८"६" X ५"५" । लिपि—नागरी ।
- ३४२—उत्तरांगोपकथा । प्रं०—कवि लखनसेन । लि०—X । र० का०—१८५४ वि० । लि० का०—१८५४ वि० । पत्र-सं०—२४ । दगा—पूर्ण । आ०—६"४" X ३" । लिपि—नागरी ।
- ३४३—प्रेमरत्न । प्रं०—रामानुजदास<sup>३</sup> (?) । लि०—धर्मनाथदास । र० का०—X । लि० का०—१६६५ वि० । पत्र-सं०—४२ । दगा—पूर्ण । आ०—१०"२" X ६"१२" । लिपि—नागरी ।

१—भयमा (शाहाबाद, बिहार)-निवासी; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; १९७० वि० के लगभग वर्तमान; पद्यम 'वीर अर्जुन' के रचयिता; हुँवरसिंह (संस्कृत-महाकाव्य भद्रकावित्त) के प्रत्यक्षार ।

२—नवोपलब्ध कवि; ईशाक (हजारीबाग, बिहार)-निवासी; सं० १९६३ वि० के लगभग वर्तमान; गदाधरसिंह के पुत्र, जाति के खत्री । विविध राग-रागिणियों में इनकी रचनाएँ हैं ।

३—इनके साथ कवि की 'श्रावण-महात्म्य' नामक रचना भी है ।

४—नवोपलब्ध; दक्षीणवर्ती खत्री में वर्तमान और शैबान-नरेश महाराज खुराजसिंह के गुह से निम्न; दे० ना० प्र० सं० (काशी), खो० वि० १९०१, प्रं० सं० ७ ।

- ३७४—कृष्ण जन्म वधाई । ग्रं०—जीवनदास<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१८ । दृग्—पूर्ण । आ०—६१२"X७८" । लिपि—नागरी ।
- ३७५—रामचन्द्रिका । ग्रं०—केशवदास<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१६८ । दृग्—खण्डित । आ०—६१२"X५६" । लिपि—नागरी ।
- ३७६—भैरव प्रकाश । ग्रं०—बच्चू मलिक<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१८७५ ई० । पत्र-सं०—४० । दृग्—पूर्ण । आ०—८१०"X५३" । लिपि—नागरी ।
- ३७७—पाण्डवचरितार्णव । ग्रं०—देवीदास<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—२०० । दृग्—खण्डित । आ०—१२"X६" । लिपि—नागरी ।
- ३७८—पाण्डवचरितार्णव (२ भाग) । ग्रं०—देवीदास । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—११ । दृग्—पूर्ण । आ०—१२"X६" । लिपि—नागरी ।
- ३७९—पाण्डवचरितार्णव । ग्रं०—देवीदास । लि०—त्रिभुवनदास । र० का०—X । लि० का०—१६२६ वि० । पत्र-सं०—३८४ । दृग्—पूर्णा । आ०—१३८"X६१३" । लिपि—नागरी ।
- ३८०—गीता भाहात्म्य प्रकाश लीला । ग्रं०—जगन कवि<sup>४</sup> । लि०—X । र० का०—१६३५ वि० । लि० का०—X । पत्र-सं०—१० । दृग्—पूर्ण । आ०—८"X२४" । लिपि—नागरी ।

१—इस नाम के दो अन्य ग्रन्थकार हो चुके हैं । कवि हरसहाय के गुरु और गाजीपुर-निवासी जीवनदास का रचनाकाल सं० १८८५ वि० है तथा 'ककडरा' के ग्रन्थकार का रचनाकाल ज्ञात नहीं हो सका है । \*दे० ना० प्र० सं० (काशी) का खो० वि० १९०९—११, प्र० सं० १०५, ए० और प्र० सं० १४१ ।

२—१९वीं शती में वर्तमान; हुमराँव-राज्य के आश्रित; सङ्गीतज्ञ कवि; घनारंग के समकालीन ।

३—ईशक (हथारीवाग, बिहार) के निवासी; पटुमनदास के समकालीन ।

४ खोज में नवोपलब्ध; साधारण श्रेणी के एक 'जगन' नामक कवि १६५२ वि० में हो चुके हैं, जिनका र० का० १६८० वि० था । दे० मिश्रबन्धु-विनोद (पंचम संस्करण, गंगा-प्रधागार, लखनऊ) पृ० सं० ३३६ और कवि-सं० ३९८ ।

- ३८१—हरिहरकथा । प्र०—तुलाराम<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१८ । दशा—खण्डित । आ०—८"१२"X३"१४" । लिपि—नागरी ।
- ३८२—रामरक्षा । प्र०—रामानन्द<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—७"४"X३"१४" । लिपि—नागरी ।
- ३८३—महाभारत भाषा । प्र०—ललितराम<sup>३</sup> । लि०—दुर्गाप्रसाद । र० का०—X  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७० । दशा—पूर्ण । आ०—६"X३" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३८४—शिवपुराणरत्न । प्र०—कुंजनदास<sup>४</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६७४ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"X८"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३८५—नृसिंह चरित्र । प्र०—दयालदास । लि०—चन्दलाल । र० का०—१७६८ वि० ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१२२ । दशा—पूर्ण । आ०—६"८"X३" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३८६—रामायणमार ( रामायण की टीका ) । टीका—लखनजी परमहंस । लि०—  
रामगोबिन्ददास । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—३३३ ।  
दशा—खण्डित । आ०—१२"८"X६"८" । लिपि—नागरी ।

१—कवि केशवदास के समकालीन, सजबरीया (चनपडिया, चम्पारन, बिहार)-निवासी; १७६० ई० के लगभग वर्तमान, ज्ञाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; ममीली दरबार में महाराजा युगलकिशोरसिंह के आश्रित; इनकी स्मृति में बडुलहर (चम्पारन) में बूढ़े गंढक के एक घाट का नाम 'तुलाराम घाट' है । इनके पुत्र श्रोतस्वामीप्रसादमिश्र एवं पौत्र श्रीमोहनदत्तमिश्र भी कवि हो चुके हैं । उपेन्द्रनाथमिश्र और कमलेशमिश्र इनके वंशज वर्तमान हैं । इनकी दो रचनाएँ—'हरिहरकथा' और 'तुलाराम के पत्र'—खोज में मिली हैं ।

२—१८वीं शती में वर्तमान । दे०: हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का सक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ।

३—नबोरऊच्य कवि; प्रियर्सन की खोज में कवि-सं० ९१७ और शिवसिंह-सरोज-सं० ८२४ । दे०: प्रियर्सन-रुन 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास'—श्रीकेशरीलाल शुभ (अनुवादक), पृ० सं० ३२२ ।

४—पैवार (शाहाबाद, बिहार)-निवासी, दे०: वि० रा० मा० प० से प्रकाशित 'प्रचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड), पृ० सं० 'घ' और प्र० सं० २१ की द्विपणो ।

- ३८७—भरथ विलाप । ग्रं०—ईश्वरदास<sup>१</sup> (इसरदास) । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—७१४" x ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३८८—महाभारत भाषा । ग्रं०—सबलसिंह चौहान । लि०—सूर्यगुलामसिंह ।  
र० का०—x । लि० का०—१२८० फ० = १६२६ वि० । पत्र-सं०—२१६ ।  
दशा—पूर्ण । आ०—१०८" x ६०" । लिपि—नागरी ।
- ३८९—रामचरित मानसबोध । ग्रं०—मधुकवि<sup>२</sup> । लि०—x । र० का०—१६६५ वि० ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—१२२ । दशा—पूर्ण । आ०—१०१०" x ८६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९०—रामचरित मानसबोध । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—२००२ वि० ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—१०० । दशा—पूर्ण । आ०—१३" x ८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९१—रामचरित मानसबोध । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—१६६१ वि० ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—४१७ । दशा—पूर्ण । आ०—१२६" x ७६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९२—रामचरित मानसबोध । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—७७ । दशा—खण्डित । आ०—८" x ६८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९३—रामचरित मानसबोध । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—६६ । दशा—खण्डित । आ०—८" x ६०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९४—रामचरित मानसबोध ( उत्तरार्द्ध ) । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x ।  
र० का०—x । लि० का०—x । पत्र-सं०—६६ । दशा—खण्डित । आ०—  
१३४" x ८४" । लिपि—नागरी ।
- ३९५—रामचरितरसामृत । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—१६६५ वि० । लि०  
का०—x । पत्र-सं०—२४० । दशा—खण्डित । आ०—१२४" x ७१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ३९६—दुखदमन दोहावली ( १ भाग ) । ग्रं०—मधुकवि । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—८६" x ६८" ।  
लिपि—नागरी ।

१—खोज में नवोपलब्ध प्रतीत होते हैं । रसिकसुमति के पिता, सं० १८७५ वि० में वर्तमान एक 'ईश्वरदास' नामक ग्रन्थकार हो चुके हैं । सम्भवतः भरथ-विलाप के ग्रन्थकार इनसे भिन्न हैं ।

२—पिछड़े ( सारन, बिहार )-निवासी; सं० २००५ वि० में वर्तमान ।

- ३६७—दुम्यद्वमन दोहायली (० भाग)। प्रं०—मयुक्त्वि। लि०—x। र० का०—  
१६४८ ई०। लि० का०—x। पत्र-सं०—३०। दशा—पूर्ण। भा०—  
८"x६"१"। लिपि—नागरी।
- ३६८—मोहन गानचरित। प्रं०—मयुक्त्वि। लि०—x। र० का०—x। लि०  
का०—x। पत्र-सं०—२६८। दशा—पूर्ण। भा०—१३"४"x७"१०"।  
लिपि—नागरी।
- ३६९—ईश विनय। प्रं०—कान्हजीसहाय<sup>१</sup>। लि०—x। र० का०—x। लि०  
का०—x। पत्र-सं०—१२। दशा—पूर्ण। भा०—११"x८"१२"।  
लिपि—नागरी।
- ४००—कान्हजी के गीत (संगीत)। प्रं०—कान्हप्रसाद। लि०—x। र० का०—x।  
लि०—x। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। भा०—८"x५"। लिपि—नागरी।
- ४०१—कान्हजी के गीत (संगीत)। प्रं०—कान्हप्रसाद। लि०—x। र० का०—x।  
लि० का०—x। पत्र-सं०—५। दशा—सद्विद्वत्। भा०—८"x५"१"।  
लिपि—नागरी।
- ४०२—भगवान की स्तुति। प्रं०—शाहशही<sup>२</sup> (बादशाह)। लि०—मोहननारायणसिंह।  
र० का०—x। लि० का०—x। पत्र-सं०—३। दशा—पूर्ण। भा०—  
६"१"x४"४"। लिपि—नागरी।
- ४०३—गनेरा महात्म। प्रं०—x। लि०—दोहू छोहार। र० का०—x।  
लि० का०—१२२२ फ० = १८७१ वि०। पत्र-सं०—२६। दशा—सद्विद्वत्।  
भा०—७"६"x५"। लिपि—नागरी।
- ४०४—प्रह्लाद चरित्र। प्रं०—x। लि०—x। र० का०—x। लि० का०—x।  
पत्र-सं०—३०। दशा—पूर्ण। भा०—६"८"x५"। लिपि—नागरी।
- ४०५—गुरुदेव चर्या। प्रं०—x। लि०—x। र० का०—x। लि० का०—x।  
पत्र-सं०—२०। दशा—सद्विद्वत्। भा०—८"x५"। लिपि—नागरी।
- ४०६—मूर्ज पुरान। प्रं०—x। लि०—भुजुगल। र० का०—x। लि० का०—x।  
पत्र-सं०—२५। दशा—पूर्ण। भा०—७"x६"। लिपि—नागरी।
- ४०७—चन्द्रोमोचन। प्रं०—x। लि०—भुजुगल। र० का०—x। लि० का०—  
१२८७ फ० = १६३६ वि०। पत्र-सं०—२४। दशा—पूर्ण। भा०—७"x६"।  
लिपि—नागरी।
- ४०८—मूर्ज पुगन। प्रं०—x। लि०—x। र० का०—x। लि० का०—१२६६  
फ० = १६४८ वि०। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। भा०—५"४"x४"५"।  
लिपि—नागरी।

१—शाहशही (विहार)-निकामी, पनारंग के मयुक्त्विन, १८वीं शती में वर्तमान।

२—कान्हजी बादशाह का पुत्र, दिल्ली का बादशाह, म० १०१५ वि० में वर्तमान।



- ४०६—हनुमान अस्तुति । ग्रं०—X । लि०—भुलुलाल । र० का०—X । लि० का०—  
१२८८ वि० । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—७\*२"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४१०—गुरुमहिमा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—६\*१२"X६" । लिपि—कैथी ।
- ४११—रामकथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—११ । दशा—खण्डित । आ०—८\*१२"X६" । लिपि—नागरी ।
- ४१२—दानलीला । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—३ ।  
दशा—खण्डित । आ०—७\*८"X२\*१२" । लिपि—नागरी ।
- ४१३—धनुषभंग । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२ । दशा—खण्डित । आ०—८\*७"X४\*५" । लिपि—नागरी ।
- ४१४—सीतापताल । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—४० । दशा—खण्डित । आ०—८"X५\*१०" । लिपि—कैथी ।
- ४१५—प्रह्लाद चरित्र । ग्रं०—X । लि०—गिवरतनराम । र० का०—X । लि०  
का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ०—७\*१२"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४१६—भजनावली । ग्रं०—X । लि०—रामेश्वरप्रसाद । र० का०—X । लि०  
का०—१६०६ वि० । पत्र-सं०—३५६ । दशा—पूर्ण । आ०—७\*६"X५\*१२" ।  
लिपि—कैथी ।
- ४१७—सुदामा की चारहखड़ी । ग्रं०—X । लि०—नरेन्द्रनारायणसिंह ।  
र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—  
६\*६"X४\*०" । लिपि—नागरी ।
- ४१८—राग परज । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१४ । दशा—खण्डित । आ०—६\*८"X५" । लिपि—नागरी ।
- ४१९—सूरजपुराण । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२० । दशा—खण्डित । आ०—६"X४\*१२" । लिपि—नागरी ।
- ४२०—वृन्दावन लीला । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—  
१८८५ वि० । पत्र-सं०—६२ । दशा—खण्डित । आ०—४\*२"X२\*१४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४२१—आभास रामायण । ग्रं०—X । लि०—प्रेमरंग । र० का०—X । लि०  
का०—१८८४ वि० । पत्र-सं०—८६ । दशा—पूर्ण । आ०—७\*८"X४\*२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४२२—कवित्त संग्रह । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२५ । दशा—खण्डित । आ०—६\*८"X४\*१०" । लिपि—नागरी ।

- ४२३—जगन्नाथ रामायण । घं०—X । लि०—भगवान्नाथ । र० का०—X । लि० का०—१७५५ वि० । पत्र-सं०—२५८ । दद्या—स्यदिन । आ०—११°१०" X ६" । लिपि—नागरी ।
- ४२४—तुलसी मुभाषावली । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—५ । दद्या—पूर्ण । आ०—१०°१२" X ५°८" । लिपि—नागरी ।
- ४२५—नलचरित्र । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१८७५ वि० । पत्र-सं०—२० । दद्या—स्यदिन । आ०—६°८" X ५°१०" । लिपि—नागरी ।
- ४२६—दृष्टान्तबोधिका (प्रथम शतक) । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—६ । दद्या—पूर्ण । आ०—१२" X ५°८" । लिपि—नागरी ।
- ४२७—दृष्टान्तबोधिका (द्वितीय शतक) । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—६ । दद्या—स्यदिन । आ०—१२" X ६" । लिपि—नागरी ।
- ४२८—दृष्टान्तबोधिका (रामनाम शतक) । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि०—X । पत्र-सं०—७ । दद्या—पूर्ण । आ०—१२" X ५" । लिपि—नागरी ।
- ४२९—दृष्टान्त शतक । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—७ । दद्या—पूर्ण । आ०—१०°४" X ५" । लिपि—नागरी ।
- ४३०—मनबोध । घं०—X । लि०—गीतलदास । र० का०—X । लि० का०—१२६७ फ० = १६१६ वि० । पत्र-सं०—२४ । दद्या—स्यदिन । आ०—६°४" X ६°१०" । लिपि—नागरी ।
- ४३१—मंगलपुराण । घं०—X । लि०—गीतलदास । र० का०—X । लि० का०—१२६७ फ० = १६१६ वि० । पत्र-सं०—१३ । दद्या—पूर्ण । आ०—६°४" X ६°१०" । लिपि—नागरी ।
- ४३२—मौनगीता । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—११ । दद्या—पूर्ण । आ०—५°८" X ३°१०" । लिपि—नागरी ।
- ४३३—त्रैमरतन । घं०—X । लि०—चेन्नराम । र० का०—X । लि० का०—१६०६ वि० । पत्र-सं०—२८ । दद्या—पूर्ण । आ०—६°८" X ७°१२" । लिपि—नागरी ।
- ४३४—भजनाष्टी । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१४ । दद्या—स्यदिन । आ०—६" X ५°८" । लिपि—नागरी ।
- ४३५—भजन संग्रह (गुण्ट, गंगीन) । घं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—१० । दद्या—पूर्ण । आ०—६°१०" X ५°६" । लिपि—नागरी ।

- ४३६—भरथकथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—६ । दया—खण्डित । आ०—६"४" X ५"१०" । लिपि—नागरी ।
- ४३७—रामकथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—७८ । दया—खण्डित । आ०—८"६" X ४"१२" । लिपि—नागरी ।
- ४३८—रामजन्म-कथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१२ । दया—खण्डित । आ०—८"६" X ५"२" । लिपि—नागरी ।
- ४३९—त्रिचारमाला । ग्रं०—X । लि०—जटुनायक भगत । र० का०—X ।  
लि० का०—१८८८ वि० । पत्र-सं०—२१ । दया—पूर्ण । आ०—६"४" X ४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४०—सावित्री सत्यवान की कथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—५ । दया—खण्डित । आ०—६" X ६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४१—सीतापताल । ग्रं०—X । लि०—घीतलदास । र० का०—X । लि०  
का०—१६१० वि० । पत्र-सं०—४३ । दया—पूर्ण । आ०—६"४" X ६"१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४२—स्कन्धपुराण की सांख्यवखानी । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२६ । दया—खण्डित । आ०—६" X ४"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४३—कृष्णजन्मोत्सव । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—३२ । दया—खण्डित । आ०—७" X ६"१३" । लिपि—नागरी ।

### काव्य

- ४४४—गोपाल गारी । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—लालाजगन्नाथसिंह । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—४ । दया—पूर्ण । आ०—७"८" X ५"१४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४५—मुखद सतसई । ग्रं०—मधुकवि । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—५८ । दया—पूर्ण । आ०—१२"१२" X ७"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४६—गोहन शकुनावली । ग्रं०—मधुकवि । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—५४ । दया—खण्डित । आ०—१२"१२" X ७"१०" । लिपि—नागरी ।

१—इस जिल्द में—(१) रामपचासा (पृ० सं० ५६), (२) रामवील गोसाई-  
गाथा, अर्थात् गोखामी तुलसीदास का जीवन-चरित्र (पृ० सं० ५८), और  
(३) भारत-सुधार नाटक (पृ० सं० २१) नामक रचनाएँ भी इस प्रंधकार की हैं ।

- ४४७—सुन्दरदाम के मवैया । प्र०—सुन्दरदाम<sup>१</sup> । लि०—X । र० का—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—३० । दशा—पूर्ण । आ०—६°४'४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४८—रामचन्द्रिका । प्र०—केशवदाम । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—८० । दशा—खण्डित । आ०—१२°१२'X५" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४४९—रामचन्द्रिका (मटीक) । प्र०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२४६ । दशा—खण्डित । आ०—१४"X६°१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४५०—रसिक दोङ्कली । प्र०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१५ । दशा—खण्डित । आ०—६°८'X५°२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४५१—रमिकमाल वर्षोत्सव । प्र०—हितहरिवंश । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—२३४ । दशा—पूर्ण । आ०—१०°८'X८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४५२—विहारी सतसई । प्र०—विहारीलाल । लि०—खिवाजीभट्ट । X । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८१३ वि० । पत्र-सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
६"X५°१०" । लिपि—नागरी ।
- ४५३—विहारी मतमई । प्र०—विहारीलाल । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—१६ । दशा—खण्डित । आ०—१२"X४°८" । लिपि—मैथिली ।
- ४५४—विहारी सतसई । प्र०—विहारीलाल । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—१८५७ वि० । पत्र-सं०—४४ । दशा—पूर्ण । आ०—६°६"X४°२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४५५—विहारी सतसई (मटीक) प्र०—विहारीलाल । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४५ । दशा—खण्डित । आ०—१२"X४°१२" ।  
लिपि—मैथिली ।
- ४५६—विहारी मतसई (मटीक) । प्र०—विहारीलाल । लि०—X । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—X । पत्र-सं०—१२८ । दशा—खण्डित । आ०—  
१२"X६" । लिपि—नागरी ।
- ४५७—गोपाल बाललीलासार । प्र०—जनभगवानदास । लि०—X । र० का०—X ।

१—द्राक्षी के शिष्य; (दौसा, जयपुर)-निवासी; सं० १७४६ वि० में वर्तमान ।  
दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (५यम भाग), काशी-नागरी-  
प्रचारिणी सभा ।

लि० का०—१६३५ वि० । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—७°१२'×५°४" ।  
लिपि—नागरी ।

४५८—त्रिजय मुक्तावली । ग्रं०—'छत्रसिंह' । लि०—भोलानाथ । र० का०—१७५७  
वि० । लि० का०—१६३० वि० । पत्र-सं०—२८ । दशा—खगिदत । आ०—  
६°५'×६°४" । लिपि—नागरी ।

४५९—रत्नराज । ग्रं०—'मतिराम' । लि०—हीरामणिमिश्र । र० का०—१८८१ वि० ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२°×४°१२" ।  
लिपि—नागरी ।

४६०—शिवदीपक । ग्रं०—'जैरामदास' । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—  
१८८३ वि० । पत्र-सं०—१७ । दशा—पूर्ण । आ०—६°१०'×५" । लिपि—नागरी ।

४६१—युगल विहार । ग्रं०—'दर्शनशर्मा' । लि०—X । र० का०—१६५५ वि० ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६५ । दशा—पूर्ण । आ०—८°१२'×५°६" ।  
लिपि—नागरी ।

४६२—रामाश्वमेध । ग्रं०—'मधुसूदनदास' । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—१६०८ वि० । पत्र-सं०—३२५ । दशा—खगिदत । आ०—१३°८'×६°१०" ।  
लिपि—नागरी ।

४६३—प्रेम प्रकाश । ग्रं०—'गोस्वामी गोवर्द्धनलाल' । लि०—'मूलचन्द्रलाल' ।  
र० का०—X । लि० का०—१६७३ वि० । पत्र-सं०—१४० । दशा—पूर्ण । आ०—  
१३°६'×८°४" । लिपि—नागरी

१—ग्यालियर-राज्य के भदावर (अटेर)-निवासी; सं० १७५७ वि० के लगभग वर्तमान;  
जाति के श्रीवास्तव कायस्थ; अमरावती के राजा कल्याणसिंह के राजकवि । काशी-  
नागरी-प्रचारिणो-सभा की खोज में भी यह रचना मिली है । दे० खो० वि०  
१९०६—८, ग्रं० सं० २३ और खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ४८ ।

२—तिगवाँपुर (कानपुर)-निवासी; सं० १७०७ के लगभग वर्तमान ।

३—सं० १८२२ के लगभग वर्तमान; इसके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं ।  
दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-  
प्रचारिणी सभा, पृ० सं० ११५ । खोज में प्राप्त दूसरी प्रति में रचना-काल  
सं० १८३९ वि० = १७८२ ई० है । दे० ना० प्र० सं० (काशी) खो० वि०  
१९०९—११; ग्रं० सं० १८१; खो० वि० १९२०—२२, ग्रं० सं० ९७ और  
खो० वि० १९२३—२५, ग्रं० सं० २५१; खो० वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० २७८  
ए० बी० और सी० । नागरी-प्रचारिणो सभा (काशी) की खोज में उपलब्ध  
प्राचीनतम हस्तलेख सं० १८६७ ई० = १९०३ वि० का है ।

४—गोस्वामी हितइरिवंश के वंशज; ईसा की उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्तमान; चौदह  
भाषाओं के ज्ञाता ।

- ४६४—हितोपदेश । प्र०—पदुमनदास<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि०का०—X ।  
पत्र-सं०—११६ । दशा—खगिडन । आ०—C"X५"१२" । लिपि—नागरी ।
- ४६५—हितोपदेश । प्र०—श्यामदास । लि०—पदारथदास । र० का०—X ।  
लि० का०—१६०४ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—७"१०"X६" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४६६—गोपाविरह । प्र०—रामप्रसाद<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—६"५"४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४६७—अमर चन्द्रिका ( बिहारी सनमई की टीका ) । प्र०—सुरतमिथ<sup>३</sup> ।  
लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—६८ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१०"X६"४" । लिपि—नागरी ।
- ४६८—गीतसंग्रह । प्र०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—४८ । दशा—खगिडन । आ०—७"८"X५"१२" । लिपि—कैथी ।
- ४६९—दृष्टान्त दोहा । प्र०—X । लि०—X । र० का०—X । लि०का०—X ।  
पत्र-सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—६"X४" । लिपि—नागरी ।
- ४७०—ग्रहलाद चरित्र । प्र०—X । लि०—दिनेगानन्द । र० का०—X ।  
लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—८५ । दशा—पूर्ण । आ०—८"X४"१०" ।  
लिपि—नागरी ।

१—हजारोबाग (बिहार)-निवासी, रामगढ़-राज्य के आश्रित कवि; सं० १७३८ वि० में वर्तमान; इस रचना को अन्य प्रतियाँ भी खोज में मिली हैं । दे० ना० प्र० स० (काशी) खो० वि० १९२६—२८, प्र० सं० ३३९ और वि० रा० मा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ का विवरण' (पहला खण्ड) पृ० सं० 'इ', कवि-सं० १७, पृ० सं० २२, प्र० सं० २७, परिशिष्ट-३ की क्र० सं० ८ (पृ० २१७) तथा वि०-रा० मा० प० से प्रकाशित दूसरे खण्ड की पृ० सं० 'ज', कवि सं० २०, प्र० सं० १८, ४०, ८१ और ८२ ।

२—बेनिया-राज्य (बम्भारन, बिहार) के आश्रित कवि; सं० १८७७ वि० में वर्तमान ।

( ३—आगरा-निवासी; सं० १७६८ वि० के लगभग वर्तमान; ज्ञानि के कान्यकुब्ज ब्राह्मण, दिल्ली के बादशाहमुहम्मद शाह के आश्रित । इनकी अन्य साधु—अमर चंद्रिका, रस गाहक चंद्रिका, रसप्रमाणा, रसिकप्रिया टीका, कविप्रिया टीका, अलंकारमाला, सरसरस—रचनाएँ खोज में मिली हैं । दे०-खो० वि०-१९२३—२५, प्र० सं० ४१९; खो० वि० १९२६-२८; प्र० सं० ४७४ (पृ० सं० ९१, ८१०) और विशेष विवरण के लिए दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-प्रकाशना समा, पृ० सं० १८७ ।

- ४७१—महाभारत (आल्हा) । ग्रं०—x । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—८ । दशा—खगिद्धत । आ०—८'१२"×६'८" । लिपि—नागरी ।
- ४७२—विश्विध गीत<sup>१</sup> । ग्रं०—x । लि०—गोपाललाल । र० का०—x ।  
लि० का०— । पत्र-सं०—१४ । दशा—खगिद्धत । आ०—७'१२"×६'६" ।  
लिपि—कैथी ।
- ४७३—हरिचंद्रकथा । ग्रं०—x । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण, जीर्ण । आ०—६'०"×४'१०" । लिपि—नागरी ।
- ४७४—हिन्दी महाभारत (पद्यबद्ध) ग्रं०—x । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—२४ । दशा—खगिद्धत, जीर्ण । आ०—८'१२"×३'१२" ।  
लिपि—नागरी ।

### स्फुट काव्य

- ४७५—दृष्टान्तसंग्रह । ग्रं०—धर्मदास<sup>२</sup> । लि०—x । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—x । पत्र-सं०—५१ । दशा—खगिद्धत ।
- ४७६—रघुवीर नारायण के स्फुट काव्य<sup>३</sup> । ग्रं०—रघुवीर नारायण । लि०—x ।  
र० का०—x । लि० का०—x । दशा—खगिद्धत । आ०—१२'४"×८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४७७—मनमोघ । ग्रं०—तुलसीदास<sup>४</sup> । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—६'६"×४'५" । लिपि—नागरी ।
- ४७८—गीतसंग्रह । ग्रं०—मुकुट दुवे<sup>५</sup> । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—१३ । दशा—खगिद्धत । आ०—६'८"×४" । लिपि—नागरी ।
- ४७९—स्फुट कविताएँ । ग्रं०—मुकुट दुवे । लि०—x । र० का०—x । लि० का०—x ।  
पत्र-सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—६'८"×४" । लिपि—कैथी ।
- ४८०—कवित्तसंग्रह । ग्रं०—मट्टकी मल्लिक । लि०—x । र० का०—x ।  
लि० का०—x । पत्र-सं०—१८ । दशा—पूर्ण । आ०—६'४"×४'२" ।  
लिपि—नागरी ।

१—इप भजन-संग्रह में सरभंग-सम्प्रदाय के संतों—भिक्षमराम और टेकमनराम—के भी फुटकर गीत हैं ।

२—कवीरदास के शिष्य; सं० १४५७ वि० के लगभग वर्तमान ।

३—नयागाँव (सारन, विहार)-निवासी; यमैली के महाराज कीर्यामिन्द सिंह के आश्रित; सं० २०११ वि० में वर्तमान ।

४—प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास से मित्र ।

५—बच्चू मल्लिक के समकालीन; हुमनाँव-राज्य के आश्रित; स्फुट गीतों के रचयिता ।

- ४८१—स्फुट कविताएँ। ग्रं०—महादेव हलुभाई<sup>१</sup>। लि०—X। र० का०—१६१० वि०।  
लि० का०—X। पत्र-सं०—५। दया—सखिदत्त। आ०—८"X६"। लिपि—नागरी।
- ४८२—लघु संग्रह। सग्रहकर्ता—हीरामन। लि०—हीरामन। र० का०—X।  
लि० का०—१६०० वि०। पत्र-सं०—१४। दया—पूर्ण। आ०—  
११"४"X४"८"। लिपि—नागरी।
- ४८३—हिन्दी कविता। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
पत्र-सं०—२। दया—सखिदत्त। आ०—६"८"X४"६"। लिपि—नागरी।
- ४८४—विविध गीतसंग्रह। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
पत्र-सं०—२८। दया—सखिदत्त। आ०—६"३"X६"। लिपि—कैथी।
- ४८५—स्फुट कविताएँ। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
पत्र-सं०—१०<sup>१</sup>। दया—सखिदत्त। आ०—७"२"X४"१०"। लिपि—नागरी।
- ४८६—विविध राग के गीत। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
पत्र-सं०—८। दया—सखिदत्त। आ०—७"२"X४"१४"। लिपि—नागरी।
- ४८७—संगीत प्रकाश। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि० का०—X।  
पत्र-सं०—६२। दया—सखिदत्त। आ०—८"६"X५"४"। लिपि—नागरी।
- ४८८—विभिन्न राग के गीत (संगीत)। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X।  
लि० का०—X। पत्र-सं०—२७। दया—सखिदत्त। आ०—६"X५"८"।  
लिपि—नागरी।
- ४८९—बधू मलिक के गीत (संगीत)। ग्रं०—बधू मलिक। लि०—सहदेव दूवे।  
र० का०—X। लि० का०—X। पत्र-सं०—३०। दया—पूर्ण। आ०—  
८"२"X६"८"। लिपि—नागरी।
- ४९०—रागमाला (संगीत)। ग्रं०—दिगम्बर दूवे<sup>२</sup>। लि०—X। र० का०—१६३४ वि०।  
लि० का०—X। पत्र-सं०—६६। दया—पूर्ण। आ०—८"८"X५"४"।  
लिपि—नागरी।
- ४९१—रागविहाग (होली, संगीत)। ग्रं०—X। लि०—X। र० का०—X। लि०  
का०—X। पत्र-सं०—५७। दया—सखिदत्त। आ०—१०"८"X६"४"।  
लिपि—नागरी।

### चरित-कान्य

- ४९२—जयप्रकाश सर्वस्व। ग्रं०—>। लि०—X। र० का०—X। लि०—X।  
पत्र-सं०—७८। दया—पूर्ण। आ०—८"३"X५"। लिपि—नागरी।

१—शाहाबाद-जिला (बिहार-राज्य)-निवासी; हुमराव-राज्याधीन गीतकार और बान्हेजोसहाय के सगदालीन।

२—शाहाबाद-जिला (बिहार-राज्य)-निवासी, हुमराव-राज्याधीन कवि, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में वरमान।



- ४६३—आत्मबोध । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१३३ । दशा—खण्डित । आ०—१२"X८" । लिपि—नागरी ।
- ४६४—रुक्मिणी मंगल । ग्रं०—रामलला । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२५ । दशा—पूर्ण । आ०—८"४"X६"८" । लिपि—नागरी ।
- ४६५—सुदामा चरित । ग्रं०—बंधमणि । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७४ । आ०—६"६"X६" । लिपि—नागरी ।
- ४६६—रामजनम । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२४ । दशा—पूर्ण । आ०—६"४"X४"६" । लिपि—नागरी ।

### काव्य-शास्त्र

- ४६७—रसिकप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—५ । दशा—खण्डित । आ०—६"८"X४"४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ४६८—रसिकप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—८ । दशा—खण्डित । आ०—६"X४"३" । लिपि—नागरी ।
- ४६९—रसिकप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—रामचरनमिथ । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१८५४ वि० । पत्र-सं०—४७ । दशा—पूर्ण । आ०—६"८"X६"४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५००—कविप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१२० । दशा—खण्डित । आ०—८"८"X५"८" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५०१—कविप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२०६ । दशा—पूर्ण । आ०—११"X७" । लिपि—नागरी ।
- ५०२—कविप्रिया । ग्रं०—केशवदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६९ । दशा—खण्डित । आ०—६"८"X७" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५०३—अष्टनायिका विवरण । ग्रं०—सुन्दरकवि<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—२१ । दशा—खण्डित । आ०—१३"X६"१२" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५०४—रसविलास । ग्रं०—कविदेव । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१२२ । दशा—पूर्ण, जीर्ण । आ०—७"८"X५" । लिपि—नागरी ।

१—यह रचना छण्णगढ़ के राजा राजसिंह की पुत्री, सं० १८४५ के लगभग वर्तमान सुन्दरकुँवरि नाम से ज्ञात खो-कवि को प्रतीत होती है। इस कवित्रिणी की एतद्-विषयक अन्य रचनाएँ भी नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) को खोज में मिली हैं।  
दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), पृ० सं० १८१।

- ५०५—रमकुमुमाकर । ग्रं०—अवधप्रतापनारायणसिंह । लि०—X । र० का—X ।  
लि० का०—१६४६ वि० । पत्र-सं० १६१ । दया—पूर्ण । आ०—६०"X७"१०" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५०६—व्यंग्यार्थ कौमुदी । ग्रं०—प्रतापसिंह<sup>१</sup> (साहि) । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र सं०—२६ । दया—खण्डित । आ०—११"१२"X४" ।  
लिपि—नागरी ।
- ५०७—रसप्रकाश । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२० । दया—खण्डित । आ०—६"X५"८" । लिपि—नागरी ।
- ५०८—कान्यनिर्णय । ग्रं०—राजकुमार : हिन्दूपति<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—  
१८०३ वि० । लि० का०—X । पत्र-सं०—४६ । दया—खण्डित । आ०—  
६"८"X६"८" । लिपि—नागरी ।
- भाषाभूषण । ग्रं०—महाराज यशवंतसिंह<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का—X । पत्र सं०—१३ । दया—खण्डित । आ०—१०"८"X६"१०" ।  
लिपि - नागरी ।

१—कवि रतनेश के पुत्र; चरखारी ( युन्देलखण्ड )-नरेश विक्रमसाहि के आश्रित;  
सं० १८८६ वि० के लगभग वर्तमान; जाति के बंदोजन; इनकी अन्य ग्यारह  
रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में मिली हैं । दे० 'हस्तलिखित  
हिन्दी-मुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' ( प्रथम भाग ), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा,  
पृ० सं० ८९ और ९० ।

२—पन्ना नरेश; सं० १८१३ वि० के लगभग वर्तमान; मिलाहीदास, रतनकवि,  
रनपसाहि और कर्णकवि के आश्रयदाता; महाराज छत्रसाल के पौत्र । दे० ना० प्र०  
स० (काशी) खो० वि०-१९०४, ग्रं० सं० १५ खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं०  
५७, १०३, १०५ और ११९ ।

३—बोधपुर-नरेश, सं० १६९२—१७३५ वि० के लगभग वर्तमान; 'जसवंतसिंह' नाम से  
भी खोज में उपलब्ध । इनकी रचनाएँ नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी खोज  
में मिली हैं । दे० खो० वि० १९०१, ग्रं० सं० ७२, ७४ और ८६; खो० वि०  
१९०२, ग्रं० सं० १४, १५, १६, १७, २२, ४६, ५७; खो० वि० १८०६—१८  
ग्रं० सं० १७६, २५१; खो० वि० १९०५, ग्रं० सं० ३९; खो० वि० १९२०-२२,  
ग्रं० सं० ७०; खो० वि० १९२३—२५, ग्रं० सं० १८३; खो० वि० १९२६-२८,  
ग्रं० सं० २०१ बी०, सी०, डी०, ई० और पृ० ४९, कवि-सं० २०१ । तथा  
काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-मुस्तकों का संक्षिप्त  
विवरण' (पहला भाग), पृ० सं० ५२ ।

५१०—साहित्य सागर । ग्रं०—जानकीकवि । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—११० । दशा—पूर्ण । आ०—११"८"X७"४" ।  
लिपि—नागरी ।

५११—सुवृत्तहार । ग्रं०—गजराजकवि । लि०—X । र० का०—१६०३ वि० ।  
पत्र-सं०—६१ । दशा—पूर्ण । आ०—१४"X७" । लिपि—नागरी ।

### छन्द-शास्त्र

५१२—छन्द त्रिभंगी । ग्रं०—लखन द्विज । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७० । दशा—पूर्ण । आ०—८"८"X४"८" ।  
लिपि—नागरी ।

५१३—छन्द विचार । ग्रं०—छन्ददेवमित्र । लि०—X । र० का०—१६२१ वि० ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—५४ । दशा—अगिद्धत । आ०—८"X५" ।  
लिपि—नागरी ।

### ज्योतिष

५१४—शकुन विचार । ग्रं०—X । लि०—अनन्तलाल । र० का०—X । लि० का०—  
१२६८ फ० = १६४७ वि० । पत्र-सं०—५ । दशा—अगिद्धत । आ०—  
६"X५"१०" । लिपि—नागरी ।

५१५—सगुनौती । ग्रं०—X । लि०—बन्धुराम । र० का०—X । लि० का०—  
१६४६ वि० । पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ०—७"१०"X६" ।  
लिपि—नागरी ।

५१६—रमल प्रकाश । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१२२ । दशा—अगिद्धत । आ०—११"६"X७"१०" । लिपि—नागरी ।

५१७—अवजद प्रश्न । ग्रं०—लालजीमित्र । लि०—लालजीमित्र । र० का०—  
१२७३ फ० = १६२२ वि० । लि० का०—१२७३ फ० = १६२२ वि० । पत्र-सं०—  
१२ । दशा—पूर्ण । आ०—६"४"X४"६" । लिपि—नागरी ।

५१८—हनुमान ज्योतिष । ग्रं०—X । लि०—मुकुट मलिक । र० का०—X ।

१—इस नाम के (दास) तीन ग्रन्थकार नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में  
मिल चुके हैं । वे उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं ।

२—बनारस-निवासी; सं १९०३ वि० के लगभग वर्तमान । यह रचना काशी-नागरी  
प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली है । दे० खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ७१ ।

३—कम्पिछा (फर्रुखाबाद) के निवासी; सं० १७२८ के लगभग वर्तमान । इनके रचित  
ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली हैं ।  
दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-मुद्रकों का संक्षिप्त विवरण' (काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा),  
पहला भाग, पृ० सं० १८४ ।

लि० का०—१२६८ वृ०=१६४० वि० । पत्र-सं०—३१ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—५'६"×४'४" । लिपि—नागरी ।

५१६—रमल पुष्पक । सं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× ।  
पत्र सं०—३ । दशा—समिद्ध । आ०—६"×५'८" । लिपि—नागरी ।

### दर्शन

५२०—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद) । सं०—× । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—१८८८ वि० । पत्र-सं०—१२७ । दशा—पूर्ण । आ०—  
५'४"×४'२" । लिपि—नागरी ।

५२१—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद) । सं०—× । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—१८७ । दशा—समिद्ध । आ०—६"×४" ।  
लिपि—नागरी ।

५२२—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद) । सं०—× । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—१६ । दशा—समिद्ध । आ०—८'८"×५'८" ।  
लिपि—नागरी ।

५२३—अध्यात्मप्रकाश । सं०—एगदेव कवि ( मिश्र )<sup>१</sup> । लि०—गोविन्ददास ।  
र० का०—× । लि० का०—१६४० वि० । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण ।  
आ०—६'४"×४" । लिपि—नागरी ।

५२४—अध्यात्मप्रकाश । सं०—एगदेव कवि ( मिश्र ) । लि०—× । र० का०—× ।  
लि० का०—× । पत्र-सं०—२० । दशा—समिद्ध । आ०—१०"×५" ।  
लिपि—नागरी ।

५२५—मणिरत्नमाला । अनुवादक—दर्शनगमां । लि०—× । अनु० का०—१३०४  
वृ० = १६६३ वि० । लि० का०—× । पत्र-सं०—५० । दशा—पूर्ण ।  
आ०—८'१०"×५'४" । लिपि—नागरी ।

### काम-शास्त्र

५२६—कामकलाप्रकाश । सं०—होददलाल । लि०—धरामदास । र० का०—× ।  
लि० का०—१६३४ वि० ।

५२७—क्रीकमार । सं०—आनन्दकवि<sup>२</sup> । लि०—शिवजीमठ । र० का०—१८१३ वि० ।  
लि० का०—१८१३ वि० । पत्र-सं०—२० । दशा—समिद्ध । आ०—  
६"×५'१०" । लिपि—नागरी ।

१—कनिष्ठा (परुषाबाद) के निवास, सं० १७२८ वि० के लगभग वर्तमान ।

२—एग० 'अनन्द' के निष्ठे विवरण में भी आ चुके हैं । ए० 'अनोन हयलिखित  
पोपदा का खोज-विवरण' (पहला मण्ड), पृष्ठ १२७-१२८ ।

५२८—कोकसार । ग्रं० X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२७ । दशा—खण्डित । आ०—८"१०"X५"१४" । लिपि—नागरी ।

### कोप

५२९—अनेकार्थध्वनिमंजरी । ग्रं०—क्षपणक<sup>१</sup> । लि०—वालकराम-पाठक । र० का०—  
प्रसिद्ध । लि० का०—१८६३ वि० । पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—  
१३"X४"१२" । लिपि—नागरी ।

५३०—नाममाला । ग्रं०—नन्ददास । लि०—वालकराम पाठक । र० का०—प्रसिद्ध ।  
लि० का०—१२४४ फ०=१८६३ वि० । पत्र-सं०—२० । दशा—पूर्ण ।  
आ०—१२"८"X४"८" । लिपि—नागरी ।

५३१—नाममंजरी । ग्रं०—नन्ददास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि०  
का०—१६०२ वि० । पत्र-सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—६"१२"X५"८" ।  
लिपि—नागरी ।

### धर्म

५३२—गर्भगीता । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२० । दशा—खण्डित । आ०—६"६"X३"१२" । लिपि—नागरी ।

५३३—गीतामाहात्म्य ( गद्य में ) । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
पत्र-सं०—४४ । दशा—पूर्ण । आ०—६"४"X३"१०" । लिपि—नागरी ।

५३४—गीतासार ( गद्य में ) । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—३२ । दशा—पूर्ण । आ०—६"६"X३"१२" । लिपि—नागरी ।

५३५—दृष्टान्तसमुच्चय । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—६"X५"८" । लिपि—नागरी ।

### धर्मशास्त्र

५३६—तिथिनिर्णय । ग्रं०—प्रभुनाथ<sup>२</sup> । लि०—X । र० का०—१९३३ वि० । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—३४ । दशा—पूर्ण । आ०—६"१२"X५"८" ।  
लिपि—नागरी ।

५३७—वर्षोत्सवनिर्णय । ग्रं०—प्रियादास<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X । लि०

१—संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक; कवि कालिदास के  
समकालीन । यह क्षपणक के मूल संस्कृत-ग्रन्थ का हिन्दी-अनुवाद है ।  
२—नवोपलब्ध कवि; १९३३ वि० में वर्तमान । इनके सम्बन्ध की कोई अन्य सूचना  
उपलब्ध नहीं है ।  
३—स्वामी हितहरिवंश के अनुयायी; सं० १९०५ वि० के लगभग वर्तमान; राधा-  
वल्लभो साधु; भक्तपाल के टीकाकार-प्रियादास से भिन्न । इनके अनेक ग्रन्थ  
ना० प्र० सं० (काशी) को खान में मिले हैं । दे० १९०९-१०, वि० १९०९-१०,  
प्र० सं० ३३१ ए०, बी०, सी०, डी० और ई० ।

का०—१६२३ वि० । पत्र-सं०—१४ । दगा—पूर्ण । आ०—६०१२"×५०" ।  
लिपि—नागरी ।

५३८—पंचकल्याणविधान—जैनधर्म-ग्रन्थ ( हिन्दी-रूपान्तर ) । अनुवादक—हरि-  
किमल । लि०—X अनु० का०—१८८० वि० । लि० का०—१६२४ वि० ।  
पत्र-सं०—३१ । दगा—पूर्ण । आ०—१०५"×६" । लिपि—नागरी ।

### स्तोत्र

५३९—अनेकमोक्षसंग्रह । सं०—गंगाराम २ । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—६ । दगा—व्यष्टित । आ०—७०"×४१२" ।  
लिपि—कैथी ।

५४०—अनेकमोक्षसंग्रह । सं०—X । लि०—बन्धुदेवदास । र० का०—X ।  
लि० का०—१६६४ वि० । पत्र-सं०—२८ । दगा—पूर्ण । आ०—८"×५२" ।  
लिपि—नागरी ।

५४१—गणेश चालीमा । सं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१६ । दगा—पूर्ण । आ०—५५"×४५" । लिपि—कैथी ।

५४२—जुगल किरोर की आरती । सं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६ । दगा—पूर्ण । आ०—७१०"×४२" ।  
लिपि—नागरी ।

५४३—दुर्गामोक्ष । सं०—दर्शनगमां । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१० । दगा—पूर्ण । आ०—८"×५४" । लिपि—नागरी ।

५४४—जै मां दुर्गे ( देवीजी की आगमनी ) । सं०—दर्शनगमां । लि०—X ।

१—ग्रन्थकार का नामोल्लेख ग्रन्थ में नहीं हुआ है । अनुवादक श्लोक में नये प्रतीक  
होते हैं । इनका रचनाकाल सं० १८८० वि० है । जैन-साहित्य में 'पञ्चकल्याण-  
पूजा', 'पञ्चकल्याणमसल', 'पञ्चसंसार', 'पञ्चपूजानिरूपण', 'पञ्चायुक्तसंगमन्त्र',  
'पञ्चकल्याणहारा' आदि ग्रन्थ मिले हैं; किन्तु इन नाम का यह ग्रन्थ भी  
सम्भवतः नबोधसम्बन्ध है ।

२—द्वय नाम के उद् ग्रन्थकार श्लोक में मिल चुके हैं, जिनमें 'जानप्रदीप' के ग्रन्थकार  
(मानवीय शिवाड़ी) का रचनाकाल सं० १८८९ है । 'गमा-भूरा' के कवि  
सं० १७४४ वि० और चन्दरी-निाषी तथा उदरसल के विता सं० १८४४ वि०  
के पूर्व वर्तमान थे । ग्रन्थ का रचनाकाल ज्ञान नहीं हो सका है । दे० ना०  
प्र० सं० (काशी) के प्रकाशित 'इतिहास हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण'  
(पहला भाग), पृ० सं० ३३ । ना० प्र० सं० (काशी) के सं० वि० १९०६—११  
और सं० सं० ८८ में उल्लिखित कवि और ग्रन्थकार कवि भविष्य प्रतीक होते हैं ।  
इसका रचनाकाल ज्ञान नहीं हो पाया है ।

र० का०—१३०३ फ०=१६५२<sup>१</sup>/<sub>१०</sub> वि० । लि०का०—X । पत्र सं०—३८ । दशा—  
पूर्ण । आ०—७'४" X ४'८" । लिपि—नागरी ।

५४५—गजपुकार । ग्रं०—X । लि०—X । र० का—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१३ । दशा—पूर्ण । आ०—५'८" X २'१०" । लिपि—नागरी ।

५४६—अभयाकरन स्तोत्र । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—१६३६<sup>१</sup>/<sub>१०</sub> वि० । पत्र-सं०—२७ । दशा—पूर्ण । आ०—५'७" X ४'६" ।  
लिपि—नागरी ।

### इतिहास

५४७—वृन्दावन के विविध वस्तु<sup>१</sup> । ग्रं०—X । लि०—X । र० का—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—८'१०" X ५'३" ।  
लिपि—नागरी ।

५४८—द्विजदर्पण (टीका-सहित) । ग्रं० रामदास<sup>२</sup> (बुलकी सिंह) । लि०—रामदास ।  
र० का०—१२०७ फ० = १८५६<sup>१</sup>/<sub>१०</sub> वि० । टीकाकाल—१६५३ वि० । लि० का०—  
१३१० फ० = १६५६ वि० । पत्र-सं०—१२० । दशा—पूर्ण । आ०—१२'८" X  
६'६" । लिपि—नागरी ।

५४९—आंगल इतिहास । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—३१७ । दशा—खण्डित । आ०—१२'१२" X ७'१०" ।  
लिपि—नागरी ।

५५०—बंगाल का भौगोलिक वर्णन । ग्रं०—नरेन्द्रनारायणसिंह । लि०—  
नरेन्द्रनारायणसिंह । र० का०—X । लि० का०—X । पत्र-सं०—७६ । दशा—  
पूर्ण । आ०—८'८" X ६'१२" । लिपि—नागरी ।

### तन्त्र

५५१—तंत्रसार । ग्रं०—कयीरदास । लि०—X । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८'८" X ७'१०" । लिपि—नागरी ।

५५२—यंत्रावली । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—८'१०" X ६'४" । लिपि—नागरी ।

५५३—रुद्रयामल तंत्र । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—७५ । दशा—खण्डित । आ०—८" X ६" । लिपि—नागरी ।

१—इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने वृन्दावन के वृक्ष, फूल तथा प्रमुख तीर्थस्थानों की सूची  
प्रस्तुत की है तथा वृन्दावन के भक्त-कवियों की नामावली भी दे दी है ।

२—खोज में नवोपलब्ध; १८५६ वि० में वर्तमान । इनके विषय में अन्य सूचना  
नहीं मिली है ।

५५४—यंत्रममुच्चय । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—८"१२"X५" । लिपि—नागरी ।

### चिकित्सा

५५५—आयुर्वेदविलास । ग्रं०—देवीसिंह<sup>१</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—१२ । दशा—खण्डित । आ०—८"X६"४" ।  
लिपि—नागरी ।

५५६—विविध रसायननिर्माणविधि । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८"१०"X७"१०" ।  
लिपि—कैथी ।

५५७—सालहोत्र । ग्रं०—X । लि०—गणेश चौबे । र० का०—X । लि० का०—  
१६८३ वि० । पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—७"१२"X६"६" ।  
लिपि—नागरी ।

५५८—सारसंग्रह<sup>२</sup> । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—२७२ । दशा—पूर्ण । आ०—६"१२"X६"६" । लिपि—नागरी ।

५५९—ऋचिसतरंजन । ग्रं०—भंगाराम । लि०—X । र० का०—X । लि०  
का०—X । पत्र-सं०—३१ । दशा—खण्डित । आ०—८"X६" । लिपि—नागरी ।

५६०—सर्वसंग्रह (चिकित्सासार) । ग्रं०—विष्णुगिरि<sup>३</sup> । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—१६०४ वि० । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"८"X४"८" ।  
लिपि—नागरी ।

### कथा

५६१—अद्भुत-समाचार । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—X ।  
पत्र-सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"४"X८"४" । लिपि—नागरी ।

५६२—वैतालपचीसी । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X । लि० का०—१६०२ वि० ।  
पत्र-सं०—१०२ । दशा—पूर्ण । आ०—८"१४"X६"४" । लिपि—नागरी ।

५६३—नासवेत की कथा । ग्रं०—X । लि०—X । र० का०—X ।  
लि० का०—X । पत्र-सं०—५५ । दशा—पूर्ण । आ०—६"४"X३"१०" ।  
लिपि—नागरी ।

१—चन्देरी-नरेश; सं० १७३३ वि० के लगभग वर्तमान ।

२—इस शिल्प में सारसंग्रह के अतिरिक्त (२७२ पृष्ठ के बाद) १. कामिनीपानभंग  
रस, २. यंत्रावली (सुखेन-वृत्त), ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ भी हैं, जिनको पृ० सं०  
क्रमशः १० और १८ है ।

३—गोसाईं गोविन्दगिरि के शिष्य; सं० १८०१ के लगभग वर्तमान ।



५६४—सिंहासन वतीसी (गद्य में) । अनुवादक—पुरयोत्तमदास<sup>१</sup> । लि० का०—५ ।  
पत्र-सं—६४ । दशा—संगिद्धत, जीर्ण । आ०—११\*१०"×५\*८" । लिपि—नागरी ।

### गीति-नाट्य

५६५—रत्नावली । अनुवादक—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र । लि०—५ । र० का०—१६\*२५ वि० ।  
लि० का०—५ । पत्र-सं—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—१०\*१२"×४\*४" ।  
लिपि—नागरी ।

### उपन्यास

५६६—वंचभोला । ग्रं०—मधुकवि । लि०—५ । र० का०—५ । लि० ।  
का०—५ । पत्र-सं—२० । दशा—पूर्ण । आ०—१२\*८"×७\*१०" ।  
लिपि—नागरी ।

### जीवन-चरित्र

५६७—मेरी रामकहानी । ग्रं०—मधुकवि । लि०—५ । र० का०—५ । लि० का०—५ ।  
पत्र-सं—१० । दशा—पूर्ण । आ०—१२\*८"×७\*१०" । लिपि—नागरी ।

### भूगोल

५६८—भूगोल पुराण । ग्रं०—५ । लि०—५ । र० का०—५ । लि० का०—१\*७\*६  
शकाब्द । पत्र-सं—१७ । दशा—पूर्ण । आ०—६\*८"×४" । लिपि—नागरी ।

### पत्र

५६९—तुलाराम-पत्र । लेखक—तुलाराम । लि०—५ । र० का०—५ । लि० का०—५ ।  
पत्र-सं—२ । दशा—संगिद्धत । आ०—११\*१०"×८" । लिपि—नागरी ।

१—सं १८१७ वि० के पूर्व वर्त्तमान; मानदास के गुरु; दादरा-निवासी । इन्होंने  
जेमिनिपुराण का भी हिन्दी-अनुवाद किया है । दे० ना० ग्रं० सं० (काशी) का  
खो० वि० १६०६—८, ग्रं० सं० १९५ और खो० वि० १९२६—२८,  
कवि-सं० ३६३, पृ० सं० ७५ ।

## परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

- ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका
- विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल
- महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण



## परिशिष्ट-३

अत्रानु रचनाकारों की कृतियाँ

[ ग्रन्थों के नामने कोष्ठों में प्रसिद्ध संख्याएँ विकल्पिता में दी गईं क्रम-संख्याएँ हैं ]

क्र.सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचना- काल	वित्तिदाय	नियोग
१	अद्भुतमहाभार (५६१)	कथा-साहित्य			
२	अनेकमोक्ष-संग्रह (५४०)	स्तोत्र-काव्य		१६६४ वि०	
३	अमयाकरन स्तोत्र (५४३)	"		१६३६ वि०	
४	आमशोध (५६३)	चरित-काव्य			
५	आमाम रामायण (५२१)	महि-काव्य		१८८४ वि०	
६	आंगु-इतिहास (५४६)	इतिहास			
७	कविसंग्रह (५२२)	महि-काव्य			
८	कोकशास्त्र (५२८)	काम-शास्त्र			
९	कृष्णकर्मोत्सव (५४३)	महि-काव्य			
१०	गङ्गुच्छर (५४५)	स्तोत्र-काव्य			
११	गरीयवाडीया (५४१)	"			
१२	गणेशमहात्म्य (५०३)	महि-काव्य		१८०१ वि०	
१३	गीता (हिन्दी) (५२०)	दर्शन			
१४	" (५२१)	"			
१५	" (५२२)	"			
१६	गंगा-महात्म्य (गद्य) (५३३)	धर्मशास्त्र			
१७	" (५३४)	"			

क्र०सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
१८	गीत-संग्रह (४६८)	काव्य			
१९	गुरुदेव-चर्चा (४०५)	भक्ति-काव्य			
२०	गुरु-महिमा (४१०)	"			
२१	गर्मगीता (५३२)	धर्म-शास्त्र			
/२२	जगन्नाथ रामायण (४२)	भक्ति-काव्य		१७५५ वि०	
२३	जुगल किशोर की आरती (५४२)	स्तोत्र-काव्य			
२४	जुलसी-सुभाषावली (४२४)	भक्ति-काव्य			
२५	दानलीला (४१२)	भक्ति-काव्य			
२६	दृष्टान्तबोधिका—प्रथम शतक (४२६)	"			
२७	दृष्टान्तबोधिका—द्वैराग्य-शतक (४२७)	"			
२८	दृष्टान्तबोधिका—रामनाम-शतक (४२८)	"			
२९	दृष्टान्तशतक (४२९)	"			
३०	दृष्टान्तदोहा (४६९)	"			
३१	दृष्टान्तसमुच्चय (५३५)	"			
३२	धनुष-भंग (४१३)	"			
३३	धर्म-संवाद (१९४)	सन्त-साहित्य		१९२६ वि०	
३४	नलचरित्र (४२५)	भक्ति-काव्य			
३५	नासकेत की कथा (५६३)	कथा-साहित्य		१८७५ वि०	
३६	प्रह्लादचरित्र (४०४)	भक्ति-काव्य			
३७	प्रह्लादचरित्र (४१५)	"		१९०५ वि०	
३८	प्रह्लादचरित्र (४७०)	"			

क्र०सं०	ग्रन्थो के नाम	विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
३९	प्रेमरतन (४३३)	भक्ति-काव्य		१८९९ वि०	
४०	वन्दीमोचन (४०७)	,		१९०६ वि०	
४१	वैतालपचीसी (५६२)	कथा-साहित्य			
४२	भजननिर्गुन (१९३)	सन्त-साहित्य		१९०२ वि०	
४३	भजनावली (४१६)	भक्ति-काव्य			
४४	भजनावली (४३४)	,		१९०६ वि०	
४५	भजनसंग्रह (४३५)	"			
४६	भरतकथा (४३६)	,			
४७	सूगोलपुराण (५६८)	भूगोल			
४८	मनवोध (४३०)	भक्ति-काव्य		१७७६ श०	
४९	मंगलपुराण (४३१)	"		१९१६ वि०	
५०	मीनगीता (४३२)	"		१९१६ वि०	
५१	यन्त्रसमुच्चय (५५४)	तन्त्र-साहित्य			
५२	यन्त्रावली (५५२)	,			
५३	रमलप्रकाश (५१६)	ज्योतिष			
५४	रमलपुस्तक (५१९)	"			
५५	रसप्रकाश (५०७)	चरित-काव्य			
५६	राग परब (४१८)	भक्ति-काव्य			
५७	रामकथा (४११)	"			
५८	रामकथा (४३७)	"			
५९	रामजन्मकथा (४३८)	"			

क्र०सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
६०	रामजन्म (४६६)	चरित-काव्य			
६१	रुद्रयामल-तन्त्र (५५३)	तन्त्र-साहित्य			
६२	विचारमाला (४३६)	भक्ति काव्य			
६३	विविध रसायन-निर्माण-विधि (५५६)	त्रिकिसा-शास्त्र			
६४	वृन्दावन के विविध वस्तु (५४७)	इतिहास			
६५	वृन्दावनलीला (४२०)	भक्ति-काव्य		१८८५ वि०	
६६	शकुन-विचार (५१४)	ज्यौतिष		१६४७ वि०	
६७	सतगुरु के लक्षण (गद्य में) (१६६)	सन्त-साहित्य			
६८	स्कन्दपुराण की सांख्य बखानी (४४२)	भक्ति-काव्य			
६९	सगुनीती ५१५	ज्यौतिष			
७०	सारसंग्रह (५५८)	त्रिकिसा-शास्त्र		१८४६ वि०	
७१	सारविवेक (१६२)	सन्त-साहित्य			
७२	सालहोत्र (५५७)	त्रिकिसा-शास्त्र		१६८३ वि०	
७३	सावित्री-सत्यवान की कथा (४४०)	भक्ति-काव्य			
७४	सीतापताल (४१४)	"			
७५	सीतापाताल (४४१)	"			
७६	सूरजपुरान ४०६	"		१६१० वि०	
७७	सूरजपुरान (४०८)	"			
७८	सूरजपुराण (४१६)	"		१६४८ वि०	
७९	सुदामा की बारहखड़ी (४१७)	"			
८०	हनुमान-श्रस्तुति (४०६)	"		१६३७ वि०	
८१	हनुमान-ज्यौतिष (५१८)	ज्यौतिष		१६४७ वि०	





- गीतावली—२७५, २७६  
 गीता-हिन्दी—५२०, ५२१, ५२२  
 गुरुदेवचर्चा—४०५  
 गुरुमहिमा—४१०  
 गोपाल-गारी—४४४  
 गोपाल-बाललीला-सार—४५७  
 गोपीविरह—४६६  
 गोरखगोष्ठी—१५१  
 गोविन्दवाल-लीलामृत—६१०  
 ग्यानगोष्ठी—१८१  
 ग्यानदीपक—१७३, १७४  
 ग्यानमूला - १७७  
 ग्यानस्व-रोदय—१८२, १८३  
 ग्यानसमुद्र—३०५  
 ग्यानसागर—१६२ क  
 धनारंग के गीत—३०१  
 चौरासी पद—३४२, ३४३  
 चौरासी वाक्ता—३४५  
 छर्ष रामायण—२७१, २७२, २७३, २७४  
 छन्द-त्रिमंगी—५१२  
 छन्दविचार—५१३  
 जगन्नाथ-महात्म—३५३, ३५४  
 जगन्नाथ-रामायण—४२३  
 जयप्रकाश-सर्वस्व—४६२  
 जंगी समाज—१६१ ख  
 जंजीरा—१५२  
 जुगलकिशोर की आरती—५४२  
 जे मां दुर्गे—५४४  
 जैमिनीपुराण—२६३, २६४  
 तंत्रसार—५५१  
 त्रियि-निर्णय—५३६  
 तीनो बानी—१६६  
 तुलाराम-पत्र—५६६  
 तुलसी सतसई—२८३  
 तुलसी-सुभाषावली—४२४  
 दविलीला—३५६
- दरियासागर—१७२  
 दानलीला—३४६, ३४७, ३४८, ४१२  
 द्विजवर्षा—५४८  
 दुर्गास्तव—३२४  
 दुर्गास्तोत्र—५४३  
 दुखदमनदोहावली—३६६, ३६७  
 दृष्टान्त-दोहा—४६६  
 दृष्टान्तबोधिका—४२६, ४२७ ४२८  
 दृष्टान्तशतक—४२६  
 दृष्टान्त-संग्रह—४७५  
 दृष्टान्त-समुच्चय—५३५  
 दोहावली—२६१  
 धर्मदासबोध—१६२ ख  
 धर्मसंवाद—१६४  
 ध्यानमंजरी—३६२  
 धनुष-भंग—४१३  
 नल-चरित्र—४२५  
 नाममंजरी—५३१  
 नाममाला—५३०  
 नासकेत की कथा—५६३  
 निरगुन—१६१  
 निरंजना गोष्ठी—१६० ख  
 निर्भय ज्ञान—१५६  
 निरनसार—१८०  
 नृसिंह-चरित्र—चरित्र ३८५  
 पंचकल्याण-विधान—५३८  
 पंचमुद्र—१५६  
 पद्मावत—३६३  
 पाण्डव-चरितारणव—३७७, ३७८, ३७९  
 पुण्य-महात्म—१५३  
 प्रबोधपचासा—२६६  
 प्रह्लाद-चरित्र—४०४, ४१५, ४७०  
 प्रेमप्रकाश—४६३  
 प्रेममूला—१७५, १७६  
 प्रेमरतन—३७३, ४३३  
 प्रेमशतक—३६६

- बंगान का भौगोलिक वर्णन—५५०  
 बंबोना—५६६  
 बन्धु मस्तिष्क के गीत—४८२  
 बर्षाई—३४१  
 बन्दीमोचन—४०७  
 बिनाडिन मीना—७६२  
 बिहारी गठगई—४५२, ४५३, ४५४, ४५५,  
 ४५६  
 बीजक—१५५, १५६  
 बँटालपबीनी—५६२  
 ब्रह्म-सिद्धि—१७८, १७९  
 ब्रह्मदान—२६८  
 ब्रह्ममाल की टीका—२६६, ३०८  
 भक्तिब्रह्ममाल - १८५, १८६  
 भक्तिभूतभाषा—३७०  
 भगवान की स्तुति—४०२  
 भक्तभावनी—३२६, ४१६, ४३४  
 भजननिष्ठुन—१६३  
 भजन-संग्रह—३०३, ३३०, ४३५  
 भरतृपया—४३६  
 भरतृपियाप २८६, २८७, २८८, ३२७,  
 ३८७  
 भागवत पद्यानुवाद—३६७  
 भागवत भाषा—३३८, ३३९  
 भाषानुवाद—५०६  
 भूगोलानुवाद—५६८  
 भैरवप्रदाय—३७६  
 भक्तिरत्नमाला—५२५  
 भक्तबोध—४३०, ४७७  
 भंगनानुवाद—४३१  
 महाभारतभाषा—३५८, ३५९, ३८३, ३८८  
 महाभारत (काव्य) - ४७१  
 भोगगीता—२६०, ४३२  
 भुक्तदान—१६० ग  
 बेरी रामकहानी—५६७  
 मोहनरघुनाथनी—४४६  
 यंत्र-भुक्तवचन—५५४  
 यंत्रावनी—५५२  
 युगन विहार—४६१  
 रघुनाथ नाटयण के कृष्ट काव्य—४७६  
 रजव की बानी—३०६  
 रत्नावली—५६५  
 रमानुसुक्त—५१६  
 रमलप्रदाय—५१६  
 रमकुनुमावरी—५०५  
 रघुप्रदाय—५०७  
 रघुराज—४५६  
 रघुविद्या—४०७  
 रत्न दोहवनी—४५०  
 रत्नप्रिया—४६७, ४६८, ४६९  
 रत्नमान—३६४  
 रत्नमानवर्णनाव—५५१  
 राग परज—४१८  
 राग माला—४६०  
 राग विहाग—४६१  
 रामना—४११, ४३७  
 रामगीतावनी—२७६  
 रामचन्द्रिका—३७५, ४४८, ४४९  
 रामचरितमानस—१६७, १६८, १६९, २००,  
 २०१, २०२, २०३, २०४,  
 २०५, २०६, २०७, २०८,  
 २०९, २१०, २११, २१२,  
 २१३, २१४, २१५, २१६,  
 २१७, २१८, २१९, २२०,  
 २२१, २२२, २२३, २२४,  
 २२५, २२६, २२७  
 रामचरित-मानसबोध—३८६, ३८७, ३८८  
 रामचरितरत्नमाला—३६५  
 रामरत्न-वचन—४३८  
 रामरत्न—३८२  
 रामरत्नगीता—३२१

- रामलला नह्यू—२८०  
 राम सतसई—२८६  
 रामायण—२२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३  
 रामायण (गोस्वामी जयरामदासकृत)—३४६, ३५०, ३५१, ३५२  
 रामायण-सार—३८६  
 रामायणमेघ—४६२  
 रक्मिणी-मंगल—४६४  
 रुद्रयामलतंत्र—५५३  
 वन-महातम—३७१  
 वर्षात्सव-निर्गण्य—५३७  
 विचारमाला—१८८, ४३६  
 विजयमुक्तावली—४५८  
 विनयपत्रिका—२६४, २६५, २६६, २६७  
 विविध गीत—४७२  
 विविध गीत-संग्रह—४८४  
 विविध रमायन-निर्माण-विवि—५५६  
 विविध राग के गीत—४८६  
 विभिन्न राग के गीत—४८८  
 विवेकसार—१८७  
 वृन्दावन के विविध वस्तु—५४७  
 वैराग्य-सन्दीपनी—२८४, २८५  
 व्यंग्यार्थ-कौमुदी—५०६  
 लघुसंग्रह—४८२  
 लीला—३६६  
 लोकपार्जनी—१६३  
 शकुन-विचार—५१४  
 शब्द—१६८  
 शिव-दीपक—४६०  
 शिवपुरानरत्न—३८४  
 शैवानन्द—२६५  
 संगीत-प्रकाश—४८७  
 संत-विलास—१७१ ख  
 संत-सरन—१६६, १७१ क  
 संत-मुन्दर—१७०, १७१ ग  
 सगुनीती—५१५  
 सत्तगुरु के लक्षण १६६  
 सत्तनाम—१६०  
 सरोई—१५४  
 सरवंग-सागर—१६१ ग  
 सर्वसंग्रह—५६०  
 सहज प्रकाश—१८६  
 सांझी—३४०  
 साखी—१५७  
 सार-विवेक—१६२  
 सार-संग्रह—५५८  
 सालहोत्र—५५७  
 सावित्री-सत्यवान की कथा—४४०  
 साहित्य-सागर—५१०  
 सिंहासनवत्तीसी—५६४  
 सिद्धान्त-सार—१६५  
 सिद्धान्त-सार पोथी—२६७  
 सिव-सागर—३११  
 सीतापाताल—४१४, ४४१  
 सीतासौरभ-मंजरी—३२५, ३२६  
 सुखद सतसई—४४५  
 मुदामा की वारहखड़ी—४१७  
 मुदामाचरित—३३१, ३३२, ३३३, ४६५  
 मुन्दरदास के सबैया—४४७  
 मुन्दर-विलास—३०४  
 सुष्ठुत्तहार—५११  
 सूरजपुराण—४०६, ४०८, ४१६  
 सूरसागर—३०७, ३०८

सेन लक्ष्मी के गोष्ठो—१६२ प

मेरुश्वानो—३४४, ३६५

सहस्रदुवारु की सोप्यद्वारा—४४२

स्नेहनीमा—३६०

सुष्टु शक्तिार्ण—४७६, ४८१, ४८५

हनुमान-दम्बुनि—४०६

हनुमान-उपनिष—५१८

हनुमान-वाटुक—२६८, २६९, २७०

हनुमान घोष—१६० प

हरिचंद्र-कथा—४७३

हरिचरित्र—३३४, ३३५, ३३६, ३३७

हरिहर-कथा—३८१

हितोपदेश—४६४, ४६५

हिन्दी-शक्ति—४८३

हिन्दी-महाभारत—४७४

## ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

[ ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं ]

अग्रदास—३६२	घनारंग—३००, ३०१, ३०२, ३०३
अवधप्रतापनारायणसिंह—५०५	चरनदास—१८२, १८३
अनाथदास—१८८	चाचा वृन्दावनदास—३६५, ३६६
आनन्दकवि—५२७	छत्रसिंह—४५८
ईश्वरदास—३८७	जगनकवि—३८०
उत्तमदास—३६४	जनभगवानदास—३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ४५७
कवीरदास—१५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१ क, ख, ग, १६२ क, ख, ग, घ, १६३, १६४, १६५	जनमोहन—३६०
कान्हजी सहाय—३९९, ४००, ४०१	जसवंतसिंह (महाराजा)—५०९
किनाराम—१८७	जानकीकवि—५१०
कुंजनदास—३८४	जीवनदास—३७४
कुशलसिंह—३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२	जैरामदास—३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५५, ३५७, ४६०
केशवदास—३७५, ४४८, ४४९, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२	तुलसीदास—१९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४,
कृष्णदास—३४६, ३४७, ३४८	
क्षपणक—५२९	
गंगाराम—५३९	
गंगाराम—५५९	
गजराजकवि—५११	
गोपालजी लाल—१९१	
गोरखनाथ—१८१	
गोस्वामी गोवर्द्धनलाल—४६३	



शाहजहाँ—४०२

शिवकुमार शास्त्री—३६७

शिवनारायणदास - १६६, १६७, १६८,  
१६९, १७०, १७१ क,  
१७१ ख, १७१ ग

शिवाराम—१८५, १८६

सबर्लसिंह चौहान—३८२

सहजोवाई—१८९

मुखदेवमिश्र—५१३, ५२३, ५२४

मुन्दरकवि (कुँवरी)—५०३

मुन्दरदास—३०४

मुन्दरदास—३०५, ४४७

सुरजदास—३१२, ३१३, ३१४, ३१५,  
३१६, ३१७

सुरतमिश्र—४६७

सूरदास - ३०७, ३०८

हरिकिसन—५३८

हलधरदास - ३३१, ३३२, ३३३

हितहरिवंश—३४०, ३४१, ३४२, ३४३,  
३४४, ३४५, ४५०, ४५१

होहंदलाल—५२६





# परिशिष्ट-४

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या		विकीप					
			रचनाकाल	लिपिकाल		प्राप्त प्रतियों की संख्या	खोज-वि. सं.			
१.	अगदास	१. ध्यानमंजरी	१६३२ वि०	१८६४ वि०	११	ना० प्र० सं०, का०, १६००	७७	इतकी अन्य दो रचनाएँ—कुण्डलिया या हितोपदेश-आख्यान (१६६६ वि०)—भी खोज में मिली है।		
				१८५६ वि०		"	" १६२०-२२	१२१ ए		
				१८५० वि०		"	" १६२३-२५	१ बी		
				१६०२ वि०		"	" १६२६-२८	४ ए, बी, सी,	४ ए, बी, सी,	
						"	" १६२९-३१	३ ए, बी, सी,	३ ए, बी, सी,	
				१८६२ वि०		"	वि० रा० भा० प०, खं-४	३६२	६०, खी० वि० १६०६-८, सं० १२१ ए, वि० का० १८३४ वि०, खी० वि० १६२०-२२, सं० १ ए; वि० रा० भा० प० (पटना), खी० वि० खं० २, प्र० सं० १०४—यह सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है।	
				१७३४ ई०		"	ना० प्र० सं०, का० १६०२	५		
				१७४८ ई०		"	" १६०६	८		
				१७६५ ई०		"	" १६१७-१९	९		
				१७८१ ई०		"	" १६२३-२५	१३ डी, ई, जी, एच्, आर्इ, जे।	१३ डी, ई, जी, एच्, आर्इ, जे।	
			२.	ग्रानन्दकवि	१. कोकसार				"	
						"	" १६२६-३१	१० सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आर्इ, जे।	१० सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आर्इ, जे।	
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			
						"	"			

प्राप्त पत्तों के स्थानांतरण, विनिष्कास एवं मोज-विबरणामय प्रत्येक-पत्ता

क्रम-संख्या	प्रकार-नाम	प्राप्त पत्तों के स्थानांतरण, विनिष्कास एवं मोज-विबरणामय प्रत्येक-पत्ता		प्राप्त प्रतियाँ की संख्या	मोज-विबरणामय (पटना) मं०	पं० सं०
		प्राप्त पत्ता	मोज-विबरणामय (पटना) मं०			
२.	आनंद बनि	१ मोज-पत्ता	१८२८ मं०	४१	वि० मं० १०० (पटना) मं० १	७६ ५२७, ५२८ १५३ मं० की १७८ मं० की
३.	कबीरदास	१ मोरलमोड़ी • २ कबीरा •	१८१३ मं० १७५३ मं० १२७८ मं० कागजी	८ २	मं० १००, मं० १६०६-११ " " १६२६-३१ वि० मं० १०० (पटना) मं० १ मं० १००, मं० १६३२-३५ वि० मं० १०० (पटना) मं० १	२३ मं० १५१, १५१ क, १६२ मं०, १६५ १०३ मं० १५२
	३ शरोद	१ मोज-पत्ता	१६१८ मं० १६५६ मं०	५	मं० १००, मं० १६०६-११ " " १६२३-२८ " " १६३२-३५ वि० मं० १०० (पटना) मं० १	१५३ डी २१५ डी १६७ डी, १०३ डी १५५
	५ श्रीजक	१ मोज-पत्ता	१८५४ मं० १८८५ मं०	६	मं० १००, मं० १६०६-११ " " १६२०-२२ " " १६२३-२५ " " १६२६-२९	१५३ मं० ७५ ॥ १६८ डी, ६, ११ क १७८ डी
	५ माली	१ मोज-पत्ता	१६०७ मं० १६५१ मं० १७५५ मं०	७	वि० मं० १०० (पटना) मं० १ " " मं० १ मं० १००, मं० १६११ " " १६०२	८० १५५, १५६ ८५ ५५, १८६, १८७

• 'मोरलमोड़ी' की संख्या  
'कबीर-मोड़ी' नाम से भी  
यह प्रत्येक प्राप्त है ।  
• इस नाम का एक प्रत्येक  
प्राप्त प्राप्त विवेकी-रहित  
मं० मं० १०० का जो मं०  
में प्राप्त है । मं० १०० मं०  
१६०५, मं० १०५; मं० १०६ मं०  
१६०६-८, मं० १७८ डी;  
मं० १०० मं० १६२३-२५,  
मं० २०० ।





क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचना-काल	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं प्राप्त प्रतियों की संख्या		खो० वि० प्र०	ग्र०-सं०	विवरण		
				लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या					
५.	केशवदास	२ रसिकप्रिया		१८६७ वि०	१८	वि० रा० भा० प० (पटना) ख० १	८६, १००			
				१८१६ वि०		" " " २			५६, ५७	
				१८५४ वि०		" " " ३			४६७, ४६८, ४६९, ४६६	
६.	कृष्णदास	१ दानलीला १ ज्ञानस्वरोदय		१७६६ वि०	१३	ना० प्र० स० का० १६००	५२	२०७		
						" " " १६०२			१८३	
						" " " १६०४			१२५, १२६	
						" " " १७६			६६ ए	
						" " " १६२०-२२			८२ ए, बी	
						" " " १६२३-२५			२०७	
						" " " १६२६-२८			२३३ बी, सी, डी	
						" " " १६२६-३१			१६२ डी, ई	
						वि० रा० भा० प० (पटना) ख० २			१०	११
						" " " ४			५००, ५०१, ५०२	
७.	चरनदास	१ दानलीला १ ज्ञानस्वरोदय		१६०७ वि०	१६	ना० प्र० स० का० १६०६-८	२४७	३४६, ३४७, ३४८		
						" " " १६०६-११			८१, ३०३	
						" " " १६२६-२८			२४७	
						वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ३			१०६	
						" " " ४			३४६, ३४७, ३४८	
						ना० प्र० स० का० १६०१			७०	
						" " " १६०३			१३५	
" " " १६०६-८	१४७ ई									
" " " १६१७-१६	३८ ए									
" " " १६२०-२२	२६ बी									





क्रम- संख्या	प्रकाशक	अध्याय	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं तालिका-विवरणसम्बन्धित प्रत्य-संख्या				विशेष	
			रचना- काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	छो० वि० प्र०		प्र० गं०
८०	मुन्शीदास	१ रामचरितमानस		१८८७ वि० १९०४ वि० १९०६ वि० १८६२ वि० १८७६ वि० १८८७ वि० १९०२ वि० १९०४ वि० १७६० वि० १८२४ वि० १८७२ वि० १८७६ वि० १८८३ वि० १८८२ वि० १८७८ वि० १८८७ वि० १९३२ वि० १७६० वि० १८७२ वि० १८७८ वि० १८८७ वि० १९०६ वि०				





प्रातः ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और लोक-विषयानुसंगति ग्रन्थ-संख्या

क्रम-संख्या	ग्रन्थनाम	रचना-काल	प्रातः ग्रन्थों की संख्या		विषय
			लिपिकाल	सो. वि. प्र.	
८.	पुस्तकीयात				
	१ रामचरित-मानस	१८५६ वि०, १६२१ वि० १६०० वि०, १६०५ वि० १६२२ वि०, १६०५ वि० १८८५ वि० १८२७ वि० १८२२ वि०	२०	ना० प्र० सं० का० १६०६-८ " " " १६०६-११ " " " १६१७-१६ " " " १६२०-२२ " " " १६२३-२५ " " " १६२६-२८ " " " १६२६-२९ " " " १६२६-३१ वि०रा०भा०प० (पटना) ख०१ ख०२ ख०४	प्र० सं० २४५ जी ३२३ एव १६६ एण १६८ के ३३२ ४८२ ए०, बी०, सी० सी० ३२५ पी०, एचू० ३६ ४२, ६३, ६४, ६५, ६४ २६५, २६५, २६६, २६७ ६० १७० २४५ बी, सी ३२३ डी, ८५० १६८ डी ४३२ ४८२ डी, ए, बी ३२५ जेडू २ २६८, २६६, २७०
	३ हनुमान वाङ्मय	१८०२ वि० १८७१ वि० १८६० वि०	१५	ना० प्र० सं० का० १६०१ " " " १६०२ " " " १६०६-८ " " " १६०६-११ " " " १६२०-२२ " " " १६२३-२५ " " " १६२६-२८ " " " १६२६-३१ वि०रा०भा०प० (पटना) ख०४	
	-	१६२५ वि०			

क्रमा-संख्या	अभ्येकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और टोपन-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या		विशेष		
			रचना-काल	लिपिकाल		प्राप्त प्रतियों की संख्या	सो० वि० प्र०
८	तुलसीदास	४ छन्दे रामायण	१८७१ वि०	१८७१ वि०	६	ना० प्र० सा०, का० १६०६-८	२४५ एच्
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१६	वि० रा० भा० प० (पटना) सा० २	१६, २०
			१६०१ वि०, १६४० वि०	१६०१ वि०, १६४० वि०	१६	सा० ३	१४३, १४७
			१६३४ वि०	१६३४ वि०	१६	सा० ४	२७१, २७२, २७३, २७४
			१६३५ वि०	१६३५ वि०	१६	ना० प्र० सा० का० १६०४	६०
			१६४४ वि०	१६४४ वि०	१६	" " १६०६-११	३२३ जी
			१८०२ वि०	१८०२ वि०	१६	" " १६१७-१६	१६६ सी
			१८६७ वि०	१८६७ वि०	१६	" " १६२०-२२	१६८ एच्
			१८२४ वि०	१८२४ वि०	१६	" " १६२३-२५	४३२
			१६०७ वि०	१६०७ वि०, १८८४ वि०	१६	" " १६२६-२८	४८२ आर, एस्
६	कविच रामायण	६ कविच रामायण	१७८८ वि०	१७८८ वि०, १८८३ वि०	१२	वि० रा० भा० प० (पटना) सा० २	३२५ एस् २,
			१६१० वि०, १८८३ वि०	१६१० वि०, १८८३ वि०	१२	" " सा० ४	३२५ टी २
			१६०५ वि०, १८७६ वि०	१६०५ वि०, १८७६ वि०	१२	ना० प्र० सा० का० १६०३	३२५ एस् २,
			१६६६ वि०	१६६६ वि०	१२	" " १६२०-२२	३२५ बी २
			१८५६ वि०	१८५६ वि०	१२	" " १६२३-२५	३२५ बी २
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१२	" " १६२६-२८	१७, ८७, ६४
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१२	" " १६२६-२८	२७५, २७६, २७६, २८१
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१२	ना० प्र० सा० का० १६०३	१२५
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१२	" " १६२०-२२	१६८ एक्
			१६१६ वि०	१६१६ वि०	१२	" " १६२३-२५	४३२

\*रामगीतावली नाम से भी यह रचना अभिहित हुई है।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचना-काल	प्राप्त प्रतियों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोल विवरणगतगत ग्रन्थ-संख्या		प्र. सं.	विवरण
				लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या		
८.	सुखीदास	कवित रामायण		१८६४ वि०	८	वि० रा० भा० प० (पटना) ख० २	१३
				१६४० वि०		" " " "	१२७
				१८६६ वि०		" " " "	१४०
				१६०८ वि०		" " " "	२७७, २७८, २८२
				१८०२ वि०		ना० प्र० सं०, का० १६०४	१०७
		१८३५ वि०	" " " " १६०६-११	३२३ सी			
				" " " " १६२०-२२	१६८ बी		
				" " " " १६२३-२४	४३२		
				" " " " १६२६-२८	४८२ एच्		
				" " " " १६२६-३१	३२५ गू २, सी २		
		१७८८ वि०, १८८४ वि०		२८१			
				१०			
		८ वं राग्यसंदीपनी				वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ४	७
						ना० प्र० सं० का० १६००	
						" " " " १६०३	८१
						" " " " १६०६-८	२४५ ई
						" " " " १६०६-११	३२३
						" " " " १६१७-१६	१६६ डी
						" " " " १६२०-२२	१६८ जे
						" " " " १६२६-२८	४८२ डी
						वि० रा० भा० प० (पटना) ख० २	६६
						" " " " ४	२८४, २८५
						ना० प्र० सं० का० १६०६-८	२४५ सी
		६ तुलसी सप्तर्षि		५		वि० रा० भा० प० (पटना) ख० २	२२, ४६, ५३
						" " " " ४	२८३

क्रमा-संख्या	प्रकार	अनुभाग	प्राप्तियों के रचनाफल, विपिनत और लोकविपर्यायान्तगत सत्य-संख्या		विशेष	
			रचना-फल	प्राप्त प्रतियों की संख्या		
८.	पुस्तक	१० अक्षरविज्ञाप	१८८८८ वि०	७	४८५ ए	* गोस्वामी पुस्तकालय की अन्य तीन— रामलला महल, रामसतवर्ष और मीनगीला— रामाई इस विवरण में है।
			१८८७७ वि०	७	४८५ ए	
			१८८११ वि०, १८८७७ वि०	७	४८५ ए	
			१८८२४ वि०	७	४८५ ए	
			१८८४४ वि०	७	४८५ ए	
९.	रसियादास	१ रसियादास	१८८६६ वि०	१२	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८५२ वि०	७	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८६६ फ०	७	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८०३ वि०	७	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८०७ वि०	७	१८०४ २५६२२०,२२८=	
१०	शामदीपक	२ शामदीपक	१८८६६ फ०	८	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८०३ वि०	८	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८६६ फ०	८	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८०३ वि०	८	१८०४ २५६२२०,२२८=	
			१८८०७ वि०	८	१८०४ २५६२२०,२२८=	



क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं प्राप्त प्रतियों की संख्या		विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	
११.	नाभादास	१ भक्तमाल	१६५७	१६०२ वि०	वि० रा० भा० प० (पटना) सं० ४
			वि०	१७१३ वि०	ना० प्र० सं० का० १२०६-११
				१६०२ वि०	" " १६१७-१६
				१६०७ वि०	" " १६२३-२५
				१६०७ वि०	" " १६२६-३१
				१६७७ ई०, १६३४ वि०	वि० रा० भा० प० (पटना) सं० १
				१७६६ वि०	" " सं० ११
१२.	विहारीलाल	१ विहारी सतसई	१७१६ वि०	१७१६ वि०	" " सं० १
			१७१६ वि०	१७१६ वि०	" " सं० १
			१७५० वि०	१७५० वि०	ना० प्र० सं० का० १६०१
			१७६६ वि०, १७४६ वि०	१७६६ वि०, १७४६ वि०	" " सं० १
			१७६३ वि०	१७६३ वि०	" " सं० १
			१७६३ वि०	१७६३ वि०	" " सं० १
			१७१७ वि०	१७१७ वि०	" " सं० १
			१६०५ वि०	१६०५ वि०	" " सं० १
			१७६२ वि०	१७६२ वि०	" " सं० १
			१६६० वि०	१६६० वि०	" " सं० १
१३.	मतिराम	१ रत्तराज	१७०७	१६२२ वि०, १६१३ वि०	वि० रा० भा० प० (पटना) सं० १
			वि०	१६२३ वि०, १६५७ वि०	वि० रा० भा० प० (पटना) सं० २
				१६६२ वि०	" " सं० ४
				१७६१ वि०	" " सं० ४
				१६३३ वि०	" " सं० ४

५३१  
२११  
११७  
२६६  
२७३ बी  
६  
१०, ११  
३०६  
१७, ५२, ७५  
६  
१३३, १३५  
३ ए, ६६ ए  
२० ए, बी  
१६२३-२५ ए-जे = १० प्रतियाँ  
१६२६-२८ ए-ई = ६ प्रतियाँ  
१६२६-३१ ए, बी, सी  
१६३५-४० ११६  
७२  
४२, ४३  
४५२, ४५३, ४५४, ४५५  
४५६  
४०  
६७  
१६६ ए  
१०५ बी





क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रंथों के रचनाकाल, लिपिकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या			विशेष						
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या		खो० वि० प्र०	ग्र० सं०				
१७.	सहजोबाई	१ सहजप्रकाश	१८२९ वि०	१८२९ वि०	६	वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ३ " " " " ख० ४	१३४ ३८८	* ग्रन्थकार की अन्य २२ रच-नाएँ-पंचेन्द्रिय-निर्णय, विचार-माला, विनय-सार, विवेक-चिन्तामणि, सुन्दरदास की बानी, हरिद्वीज, सख्यशान, विवेक चैतावनी और तारक-चिन्तामणि, ज्ञान-सागर, सुन्दर-सख्य, सुन्दर-काव्य, सुन्दर-पुष्प, सर्वांग-योग, सुख-समाधि, स्वप्न-बोध, वेद-विचार, वराहप, सुन्दरवानी, सहजानन्द, गृह-वैराग्यबोध,				
			१८१९ वि०	१८१९ वि०	६	ना० प्र० सं० का० १९०० " " " " १९०३ " " " " १९०६-८ " " " " १९२०-२२ " " " " १९२६-२८	१२९ १६२ २२६ २२६ १७१ ४१५					
			१८७० वि०	१८७० वि०	३	वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ४ ना० प्र० सं० का० १९०६-८	१८९					
			१९३० वि०	१९३० वि०	६	" " " " १९२३-२५ वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ४ ना० प्र० सं० का० १९०२	४१५					
			१७७३ वि०	१७७३ वि०		" " " " १९०३ " " " " १९०६-८ " " " " १९०९-११ " " " " १९२३-२५	३४ २४२ बी ३११ ए ४१५					
			१८७० वि०	१८७० वि०		वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ४ ना० प्र० सं० का० १९०२	३०५					
			१८३४ वि०	१८३४ वि०	११	" " " " १९०६-८ " " " " १९१२-१६ " " " " १९२३-२५ " " " " १९२६-२८	२५, २६ २४२ ए १८४ बी ४१५					
						वि० रा० भा० प० (पटना) ख० २	४६९ बी, सी, डी ७५, ७६					
			१८.	सुन्दरदास	१ सुन्दरविलास*	१७४६ वि०	१८७० वि०		३	वि० रा० भा० प० (पटना) ख० ४ ना० प्र० सं० का० १९०२	३०४ १६५	सुन्दरदास की बानी, हरिद्वीज, सख्यशान, विवेक चैतावनी और तारक-चिन्तामणि, ज्ञान-सागर, सुन्दर-सख्य, सुन्दर-काव्य, सुन्दर-पुष्प, सर्वांग-योग, सुख-समाधि, स्वप्न-बोध, वेद-विचार, वराहप, सुन्दरवानी, सहजानन्द, गृह-वैराग्यबोध,
										२ ज्ञानसमुद्र		
		३ सर्वथा										

प्राप्त भूखंडों के रकनावाक, लिपिकाल और नोज-विवरणान्तर्गत प्रक-संख्या

विवरण

धोर निविध  
भारत, गुरगा-  
भेद 1

\* इनकी प्राम  
२१ प्रमों के  
३६ हस्तलेख  
खोज में  
मिले हैं। दे०  
वि० रा० भा०  
प० (पटना)  
खं० ३, पु०  
सं० ३, रा  
धोर सं० तवा  
कवि सं० २८१

क्रम- संख्या	प्रक-नाम	रकना- वाक	प्राप्त भूखंडों के रकनावाक, लिपिकाल		प्राप्त प्रतिभों की संख्या	नो० वि० पं०		पं० सं०
			लिपिकाल	प्राप्त प्रतिभों की संख्या		वि० रा० भा० पं० (पटना)	वि० रा० भा० पं० (पटना)	
१६.	गुरजादास		१६५३ वि०	१२	वि० रा० भा० पं० (पटना) खं० ४	४४७		
			१६०६ वि० = १८५२ ई०		ना० प्र० सं० का० १६१७-१५	१८७ ए		
			१६३७ वि०		" " " १६२३-२५	४१७ बी		
			१६८८ वि०		वि० रा० भा० पं० (पटना) खं० १	१६ क		
			१६०२ वि०, १६१० वि० १८५७ ई०		" " " खं० ३	४७		
२०.	गुरदास		१८५३ वि०	२८	ना० प्र० सं० का० १६०१	२३		
			१७६२ वि०		" " " १६०४	१४२		
			१८७३ वि०		" " " १६०६-८	२४४ सी		
			१७६८ वि०		" " " १६१७-१६	१८६ वा, सी, पी		
			१८७६ वि०		" " " १६२३-२५	४१६ एफ, जी		
			१८६६ वि०		" " " १६२६-२८	एच, आई, जे		
			१८६६ वि०		" " " १६२६-२९	४७१ एम, एन		
			१८१७ वि०		" " " १६२६-३१	३१६ ए, बी, डी,		
			१८२० वि०		" " " १६३२-३४	ई, एफ, जी, एच		
			१८४४ वि०		वि० रा० भा० पं० (पटना) खं० १	४३		
		" " " खं० २, ३६						

क्रम-संख्या	अर्थकार	अर्थनाम	रेचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतिपों की संख्या	खो० वि० प्र०	प्र० सं०	विवरण
२१.	हलधरदास	१ मुद्रामाचरित		१६१३ वि० १६२४ वि० १६२१ वि० १८८२ वि० १८०० वि० १८४० वि० १७४६ प्र० = १८८४ वि० १८६७ वि०	८	वि०रा०भा०प०(पटना) ख० २ " " " " ख० ३ " " " " ख० ४ ना० प्र० सं० ना० १६०६-८ " " " " १६०६-११ " " " " १६२६-२८ वि०रा०भा०प०(पटना) ख० २ " " " " ख० ३ " " " " ख० ४	८० ११३ ३०७, ३०८ ५६. १०४ १,६३ २५ १४६ ३३१, ३३२, ३३३	

